जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष -२८ अंक -०९ मई २०२६ **सम्पादक-बिजय कुमार जैन** पृष्ठ ३६ मूल्य - १५० रूपए प्रति

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

12A Reg No. AAPCM0514R25MB01 / 80G Reg No. AAPCM0514R25MB02 / CSR Reg No. CSR00101842

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

www.mainbharathun.co.in

राष्ट्रमाता बनें

निवेदक: मैं भारत हूँ फाउंडेशन

१० मई को आयोजित
भारत के विभिन्न स्थलों में
हुए भव्य कार्यक्रम
मुंबई, कोलकाता, पुणे, इंदौर,
मालेगांव, शिरूर, जालना,
कुरावली-मैनपुरी, उत्तर प्रदेश के साथ
भारत भर से हुआ आह्वान

गौमाता बनें राष्ट्रमाता

Supported By
Rajasthan Foundation
Kolkata Chapter

आगामी घोषित कार्यक्रम

कोलकाता	इंदौर	सिलीगुड़ी	मुंबई	मुंबई
२८ जून	२ अगस्त	१३ सितंबर	२७ सितंबर	१५ नवंबर
धनोधान्य सभागार अलीपुर में	संगीत कला अकादमी मनमोहन मेहता सभागार में	मारवाड़ी उत्तर बंग सेवा ट्रस्ट सेवक रोड में	जैन एकता व पत्रकार सम्मेलन का आयोजन	केशव सृष्टि भायंदर, उत्तन में

विभिन्न जानकारियों के साथ सामाजिक व राष्ट्रीय सम्मान कार्यक्रम में शामिल होने के लिए संपर्क करें ९३२२३०७९०८

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

www.jinagam.co.in Remove INDIA Name From the Constitution INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

पधारो म्हारे देश
पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
मेरा राजस्थान
सम्पादक : बिजय कुमार जैन
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
राजस्थान का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ
मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना
भरतपुर
कोटा
जोधपुर
जैसलमेर
बीकानेर
चुरू
राजस्थान की राजधानी जयपुर
लक्ष्मणगढ़
नागौर
कुचामन
झुंझुनूँ
पाली
फतेहपुर
डीडवाना
रामगढ़
नवलगढ़
चिड़ावा
सिरोही
सरदारशहर
सीकर
रतनगढ़
लाडनूँ
जसवंतगढ़
बिसाऊ
केड
सुजानगढ़
ब्यावर
बिदासर
छोटीखाटू
तालछापर
सांभर
अजमेर
राजलदेसर
गंगाशहर
नोखा
देशनोक
कालू
रतननगर
चित्तौड़गढ़
मण्डावा
मंड्रेला
नोहर
मेवाड़
दाँता-रामगढ़
सादड़ी
खुडाला
आमेट
पड़िहारा
रींछेड़
अलसीसर
श्रीमाधोपुर
डूण्डलोद
बगड़
लोसल
मुकुंदगढ़
शिशोदा
राजसमंद राजनगर
देवगढ़
सांडेराव
खिमेल
पिलानी
औद्योगिक नगरी रानी स्टेशन
सिंघाना
बिकानेर का श्रीडूंगरगढ़
बालोतरा
नापासर
मारवाड़ मूण्डवा
महनसर
उदासर
लूनकरनसर
उदयरामसर
चाड़वास
भीम
भीनासर
मोमासर
(रिंणी) तारानगर
जसोल
भादरा
दड़ीबा
टमकोर
जालोर
भीनमाल
लाडनूँ
भोपालगढ़
पीपाड़ सिटी
मेड़ता सिटी
फलौदी
सांडवा
जैसलमेर
मेरा राजस्थान
सोजत
भारत का एक राज्य राजस्थान का एक नगर
1 प्रति ₹ 100/-
सोजत
1 प्रति ₹ 100/-
के इतिहास की प्रति मंगवाने के लिए संपर्क करें:- 022-4015-8018
सम्पादक
बिजय कुमार जैन
उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)
पंजीकृत कार्यालय
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरध्वनिः ०२२-४०१५ ८०९४ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com
विशेष छूट
विज्ञापन देने पर पूरे साल 'मेरा राजस्थान' पत्रिका मुफ्त
वार्षिक शुल्क १२००/-
आजीवन शुल्क ११,१११/-
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय भारत! जय पश्चिम बंगाल! जय गौमाता!

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101
12A Reg No. AAPCM0514R25MB01 / 80G Reg No. AAPCM0514R25MB02 / CSR Reg No. CSR00101842

Supported By
Rajasthan Foundation
Kolkata Chapter

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

द्वारा आयोजित

28th JUNE 2026

AT Kolkata

We Meet at DHONO DHANYO Auditorium, Alipore

From 11A.M.

Motivated By

भारतीय सांस्कृतिक समागम

भारत का एक राज्य पश्चिम बंगाल की राजधानी 'कोलकात्ता' में स्थापित
'धनोधान्य' अलीपुर सभागार में २८ जून २०२६ रविवार को
भव्यतिभव्य भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

भव्यतिभव्य, सांस्कृतिक,
ऐतिहासिक कार्यक्रम के साथ
B2B का आयोजन
नृत्य, गीत, संगीत के साथ
भारतीय व्यंजन का भी रहेगा संगम

अंतराष्ट्रीय पदाधिकारी

राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन, मुंबई मो. 9322307908	राष्ट्रीय महामंत्री शोभा सादानी, कोलकाता मो. 8910628944	राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा मो. 9414183919	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष निशा लड्ढा, कोलकाता मो. 9830224300	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुशीला पुगलिया, कोलकाता मो. 8617203712	राष्ट्रीय सांस्कृतिक निर्देशक दिलीप सेन, मुंबई मो. 93228 66476
राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री रवि जैन, मुंबई मो. 81088435715	राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री वर्षा मूँधड़ा, कोलकाता मो. 9874272916	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मंजू अग्रवाल, पुणे मो. 8806751782	संगठन मंत्री अनुपमा शर्मा (दाधीच), मुंबई मो. 9702205252	अंतर्राष्ट्रीय संयोजक अरूण मूँधड़ा, हॉस्टन, अमेरिका मो. 01(919)610-7106	अंतर्राष्ट्रीय संयोजक किशोर जैन, लंदन, यूके मो. 044 (770) 3827595

'एक राष्ट्र-एक नाम 'BHARAT' प्रवेश निशुल्क गौमाता बनें राष्ट्रमाता

Tariff Card

Monthly Magazine
JINAGAM

Reader Ship
17,000

Readers
All Jains

Release Date
10th date of Every Month

Magazine Size
A4

Print Area
19cm x 24 cm

Print in
Art Paper/Card

विज्ञापन दर 1st November 2022

ADVERTISEMENT RATE

Front Cover (With Photo/Sponsorship) Size : 185 x 225 mm	55,000/	+ 5% GST
Front Page (Cover Inside) Size : 185 x 225 mm	33,000/	+ 5% GST
Back Page (Cover) Size : 185 x 225 mm	35,000/	+ 5% GST
Back Page (Inside Cover) Size : 185 x 225 mm	31,000/-	+ 5% GST
Opening of Magazine/3rd Page Size : 185 x 225 mm	32,000/-	+ 5% GST
Centre Page Size : 185 x 225 mm	40,000/-	+ 5% GST
Special Position on Editorial Page (if available) Quarter Page / Strip) Size : 185 x 50 mm	8,000/-	+ 5% GST
Full Page (Inside) Size : 185 x 225 mm	22,000/-	+ 5% GST
Half Page Size : 185 x 110 mm	12,000/-	+ 5% GST
Quarter Page Size : 90 x 110 mm	6,000/-	+ 5% GST

* Per Insertion

जिनागम द्वारा अपने व्यापार को बढायें अपने आप को समस्त जैन समाज तक पहुचायें

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

अगला अंक

जैन एकता

॥ जय गुरु नाना ॥ ॥ जय महावीर ॥ ॥ जय गुरु राम ॥

स्व: रतनलाल जी सांखला जैन

युग पुरूष आचार्य श्री रामलाल जी
म.सा. के चरणों में कोटि-कोटि वंदन

राम चमक रहे भानु समाना

स्व: शांतिदेवी सांखला जैन

श्री. राजेश जैन
9619648008

MANISH FLOUR MILLS PVT. LTD.

संबधित प्रतिष्ठान

MANISH FLOUR MILLS PVT. LTD. | SHANKESHWARA FOOD PRODUCT PVT. LTD. | EURO DIAMONDS | TINY LEGEND PVT. LTD. | SOLAPUR SMASHERS

Euro Diamonds Pvt. Ltd. Manufacturer Exporter of Diamonds Jewellery

MANISH FLOUR MILLS PVT. LTD.	KADODARA - SURAT
ADINATH FLOUR MILLS PVT. LTD.	JAIPUR
EURO DIAMONDS PVT. LTD.	ANDHERI - MUMBAI
MBJ GLOBAL PVT. LTD.	DUBAI, SINGAPORE, U.K.
SHANKESHWARA PVT. LTD.	AHILYANAGAR
TINY LEGEND PVT. LTD.	MUMBAI
TIME LESS MINERALS PVT. LTD.	MUMBAI
ARRONICS INFOTECH PVT. LTD.	MUMBAI, PUNE
SOLAPUR SMASHERS	SOLAPUR

516A पंचरत्न, ऑपेरा हाऊस, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400004

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

India's Leading Brand in Ghee and Oil
NAKODA®
Pure Ghee, Edible Oils & More...
NAtural KhaO... Dilse Apnao...™
SATTVIK VERIFIED
VEGETERIAN & JAIN
QUALITY ASSURANCE
खुशबूदार पकवान, Classic स्वाद
Nakoda Filtered Groundnut Oil
also available on | Flipkart | amazon | www.nakodagheetel.com
89288 82457 / 85915 62269 / 89285 86181 / 91377 56585
GHEE AND OIL AVAILABLE IN ALL SIZE AT YOUR DOOR STEP
NAKODA TRUSTED QUALITY OVER 35 YEARS
M/s. KEWALCHAND VINODKUMAR
K.B. Products Pvt. Ltd.
Customer Care: +91 9819475175 | info@gheetel.com | /nakodagheetel
An ISO 22000:2018 & HACCP Certified Company

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

२९ वें वर्ष में प्रवेश

वर्ष -२८, अंक ०९, मई २०२६

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय
सम्पादक-बिजय कुमार जैन
जिनागम
समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका
परस्परोपग्रहो जीवानाम्

१२ अंकों का वार्षिक मूल्य रू.२१००/-

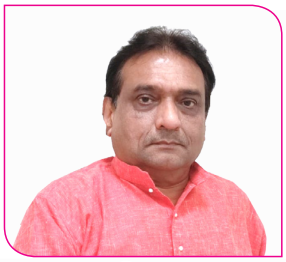

सम्पादक - बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
सह संपादक डॉ. अल्पना गंगवाल, मालेगांव,
मो: ९३६९२ ५३११३
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)
मो: ९७०२२ ०५२५२

- 'जिनागम' में प्रकाशित लेखों/कविताओं/ समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्व सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'जिनागम' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल,
अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-४०१५८०९४
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com
अन्तरताना:- http//www.jinagam.co.in

श्वेताम्बर दिगम्बर • **सम्पादकीय** • दिगम्बर श्वेताम्बर

हर कोई खुश रहे-जिनागम

हम सब आज के आधुनिक जीवन को जी रहे हैं, हर एक किसी न किसी रूप में आगे बढ़ने की विपाशा में त्रस्त है, कारण यह है कि आपसी परिसंवाद ना होने के कारण दुखी हैं। आगे बढ़ें, जरूर बढ़ें, बढ़ना भी चाहिए पर साम्यवाद तरीके से, एक दूसरे की प्रशंसा करते हुए, जानते हैं एक दूसरे की प्रशंसा करने से स्वयं का हृदय तो खुश होता ही है, जो की विवाद में नहीं पड़ता, हृदय खुश तो हमारा मस्तिष्क खुश, तो हम भी खुश और हमारा परिवार भी खुश, हमारा पड़ोसी भी खुश, समाज भी खुश, तो राष्ट्र भी खुश यानी कि सभी खुश तो हमारे जीवन की रश्मियां भी खुश...

सर्व जैन पंथों की घोषित एकमात्र भारतीय संस्कृति से रमी पत्रिका 'जिनागम' के संपादकीय में 'खुशी' का विषय लेकर आज क्यों लिख रहा हूं वह इसलिए कि 'भारत' के विभिन्न पांच राज्यों में चुनाव हुए, लोकतंत्र है, होना भी चाहिए पर एक दूसरे की बुराई क्यों करनी चाहिए? बस यही विषय है इस बार का, कि हम किसी अन्य की बुराई करने की बजाय, अपने कार्यों का बखान करें, गुणगान करें ताकि हम तो खुश रहेंगे ही और सुनने वाला भी खुश होगा, ध्यान रखें 'जिनागम' पत्रिका के प्रबुद्ध पाठक इस निवेदन को...

'संगठन शक्ति कलियुगे' इसको आगे बढ़ते हुए २८ जून कोलकाता, २ अगस्त इंदौर, १३ सितंबर सिलीगुड़ी (पर्वतीय क्षेत्र) में भव्यतीभव्य 'भारतीय सांस्कृतिक समागम' कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है, सभी 'जिनागम' पत्रिका के प्रभुत्व पाठकों से निवेदन है कि उक्त कार्यक्रम में अपने मित्रों व परिवारों को जोड़ें और 'जैन एकता' 'भारत नाम सम्मान' 'गौमाता बनें राष्ट्रमाता' भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार अभियान की सफलता के साक्षीदार बनें।

जय जिनेंद्र! जय गौमाता! जय भारत!

SBI — for payment

HDFC BANK — for payment

आपका अपना
जैन एकता का सिपाही
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

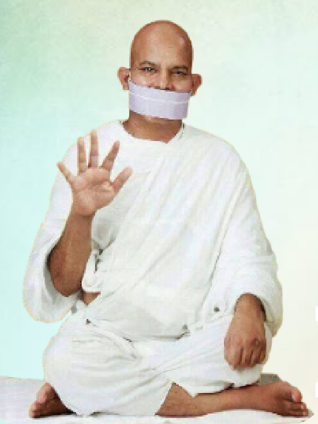

Mob: 9448779151

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६५ वें जन्म वर्ष पर कोटि-कोटि वंदन

Medal Hosiery Centre

283 Old Tharayapet, Bangalore, Karnatka, Bharat - 560053

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

आचार्य महाश्रमण जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

जन्म : वि.सं.२०१९, वैशाख शुक्ला नवमी (१३ मई १९६२) सरदारशहर

जन्म नाम : मोहनलाल दुगड़

पिता : स्व श्री झूमरमलजी दुगड़

माता : स्व.श्रीमती नेमादेवी दुगड़

दीक्षा : वि.सं.२०३१ वैशाख शुक्ला चतुर्दशी (५ मई १९७४) सरदारशहर (आचार्य तुलसी की अनुज्ञा से मुनि सुमेरमलजी 'लाडनूं' द्वारा)

अन्तरंग सहयोगी : वि.सं.२०४२, माघ शुक्ला सप्तमी (१६ फरवरी १९८६) उदयपुर

साझपति : वि.सं.२०४३, वैशाख शुक्ला चतुर्थी (१३ मई १९८६) ब्यावर

महाश्रमण पद : वि.सं.२०४६, भाद्रव शुक्ला नवमी (९ सितम्बर १९८९) लाडनूं

युवाचार्य पर : वि.सं.२०५४, भाद्रव शुक्ला द्वादशी (१४ सितम्बर १९९७) गंगाशहर

आचार्य पदाभिषेक : वि.सं.२०६७, द्वितीय वैशाख शुक्ला दशमी (२३ मई २०१०) सरदारशहर

महातपस्वी : वि.सं.२०६४, भाद्रपद शुक्ला पंचमी (१७ सितम्बर २००७) उदयपुर

शान्तिदूत : वि.सं.२०६८, ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी (२९ मई २०११) उदयपुर

श्रमण संस्कृति उद्गाता : वि.सं.२०६९, आश्विन कृष्णा चतुदर्शी (१४ अक्टूबर २०१२) जसोल

अहिंसा यात्रा शुभारम्भ :२०७१, मार्गशीर्ष बदी तृतीया (९ नवम्बर २०१४) दिल्ली से

प्रथम विदेश यात्रा : वि.सं.२०७२, चैत्र शुक्ला एकादशी (३१ मार्च २०१५) वीरगंज (नेपाल)

प्रकाशित पुस्तकें : आओ हम जीना सीखें, दु:ख मुक्ति का मार्ग, क्या कहता है जैन वाड्.मय, संवाद भगवान से (भाग-१,२), शिक्षा सुधा, शेमुषी, मेरे गीत,धम्मो मंगलमुक्किंट्ठं, महात्मा महाप्रज्ञ, सुखी बनो, संपन्न बनो, विजयी बनो, रोज की एक सलाह, शिलान्यास धर्म का, अदृश्य हो गया महासूर्य....

शेष पृष्ठ ८ पर...

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ ७ से... जिसमें आसमान को छूने का जज्बा होता है, जमीन भी उसकी हो जाती है, वस्तुत: जो व्यक्ति कुछ होने की तमन्ना रखता है, कुछ कर गुजरने का हौसला रखता है, वह एक दिन अवश्य ही अपने भाग्य, बुद्धि और परिश्रम के बलबुते पर जनमानस के मानचित्र पर सफल व्यक्तित्व के रूप में उभर जाता है। विलक्षण कर्तृत्व और विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी आचार्य महाश्रमण का जन्म वि.सं. २०१९ वैशाख शुक्ला ९ (१३ मई १९६२) रविवार को सरदाशहर में हुआ।

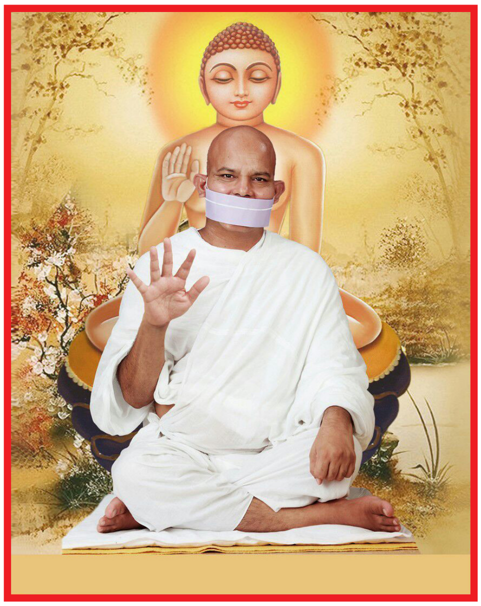

सरदारशहर राजस्थान का एक प्रमुख क्षेत्र है। गांधी विद्या मंदिर की स्थापना के बाद यह नगर राजस्थान के शैक्षणिक मानचित्र पर उभरकर आ गया, यहां अनेक आकर्षक दर्शनीय स्थल हैं। सरदारशहर तेरापंथ धर्मसंघ के अनेक ऐतिहासिक प्रसंगों का केन्द्र-बिन्दु रहा है, यहां की आबादी एक लाख से भी ज्यादा है।

पारिवारिक पृष्ठभूमि: सरदारशहर में दूगड़ जाति के परिवार सबसे अधिक हैं, अनेक गांवों से आकर यहां बसने वाले दूगड़ परिवारों में एक परिवार है श्रीमान झूमरमलजी दूगड़ का। उनके पूर्वज 'मेहरी' गांव से आकर बसे थे इसलिए वे मेहरी वाले 'दूगड़' कहलाने लगे। श्री झूमरमलजी दूगड़ के दस सन्तानें हुई-सात पुत्र और तीन पुत्रियां, उस समय 'माता' (चेचक) एक असाध्य बीमारी थी, उस लाइलाज बीमारी से ग्रस्त एक पुत्र और एक पुत्री का अल्पवय में ही स्वर्गवास हो गया। श्री झूमरमलजी 'जोरहाट', असम में रहते थे, उनका हार्डवेयर का व्यवसाय था, वे सहज, सरल, शांत स्वभावी और ईमानदार व्यक्ति थे। पन्द्रह-बीस मिनट तक नवकार महामंत्र का जप करना उनका नित्यक्रम था।

मानव जीवन की मूल्यवत्ता को समझने वाली और उसे निपुणता से जीने वाली श्रीमती नेमादेवी दूगड़ विवेक-सम्पन्न, व्यवहार-कुशल और समझदार महिला थी, वे अपने दायित्व के प्रति पूर्ण जागरूक थी। संघ और संघपति के प्रति उनमें गहरी श्रद्धा थी, उनका भाषा-विवेक गजब का था, जीवन के सन्ध्याकाल में उनको पक्षाघात हो गया, उस समय अनेक लोग उनसे मिलने आते, एक दिन एक भाई ने पूछा-'माजी! आपको तो बहुत गर्व होता होगा कि मेरा बेटा युवाचार्य है।' उन्होंने तत्काल कहा- 'मैं इस बात का गर्व नहीं करती कि बेटा युवाचार्य है पर मुझे इस बात का गौरव अवश्य है कि बेटा संघ की सेवा कर रहा है।'

बातें बचपन की: मोहन बचपन से ही प्रतिभा सम्पन्न था, उसमें गहरी सूझबूझ ग्रहणशीलता और प्रशासनिक योग्यता प्रारंभ से ही थी, उसने जैसे ही अपनी उम्र के पांच वर्ष संपन्न किए, राजेन्द्र विद्यालय में प्रवेश किया। लगभग साढ़े पांच वर्ष तक इसी स्कूल में अध्ययन किया, उस समय स्कूल के प्रधानाध्यापक श्री रेवतमलजी भाटी थे। मोहन ने स्कूल जाने से पहले ही वर्णमाला और कुछ पहाड़े सीख लिए थे, तीसरी, चौथी और पाचवीं कक्षा में वह कक्षा-प्रतिनिधि (मोनिटर) के रूप में निर्वाचित हुआ, तीनों कक्षाओं में गणित और सामान्य विज्ञान में विशेष योग्यता प्राप्त की और कक्षा तीसरी और पाचवीं में प्रथम स्थान भी प्राप्त किया, तीसरी कक्षा में खेलकूद/सांस्कृतिक प्रतियोगिता के अंतर्गत उपस्थिति में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया, अनेक धार्मिक व अन्य प्रतियोगिताओं में भी वह प्राय: प्रथम रहता, मोहन अपनी कक्षा के दो-तीन मेधावी छात्रों में से एक था, वह अध्ययन में होशियार था तो लड़ाई-झगड़े में भी कम नहीं था। मोहन बचपन से बहुत चंचल था, घर में अनेक बच्चे थे, भाई-भतीजों के साथ लड़ाई-झगड़ा चलता रहता, छुट्टियों के दिनों में तो उसका अधिकांश समय खेलकूद में ही व्यतीत होता, कभी-कभी जब माँ परेशान होकर बच्चों को पकड़ने के लिए उठती तक मोहन का छोटा भाई तो घर से बाहर दौड़ जाता और मोहन पकड़ा जाता। मां जैसे ही चपत लगाने लगती, मोहन कहता- 'माँ! आपके ही हाथों में लगेगी,' यह सुनते ही माँ का हाथ वहीं रूक जाता और वह मार खाने से बच जाता।

मोहन की खेलने में भी अच्छी रूचि थी। कबड्डी, कांच के गोले, सतोलिया, छुपाछुपी आदि उसके प्रिय खेल थे। खेलकुद प्रतियोगिताओं में वह प्राय: भाग लेता था।

प्रहर रात्रि के बाद: एक बार प्रवास में मुनिश्री सुमेरमलजी के साथ मुनिश्री सोहनलालजी (चाड़वास), मुनिश्री पूनमचंदजी (श्रीडूंगरगढ़), मुनिश्री रोशनलालजी (सरदारशहर) थे। मोहन मुनिश्री **शेष पृष्ठ ९ पर...**

पृष्ठ ८ से... सोहनलालजी के निर्देशन में अध्ययनरत रहता। विद्यार्थियों को सिखाने-पढ़ाने में मुनिश्री सोहनलालजी की कला बेजोड़ थी, वे केवल सिखाते ही नहीं थे, वैराग्य के संस्कार भी देते थे, वे हमारे धर्मसंघ के एक श्रेष्ठ कलाकार, स्वाध्यायशील और आचारनिष्ठ सन्त थे, उन्होंने मोहन को तत्त्वज्ञान के अनेक थोकड़े कंठस्थ करा दिए, जैसे-पचीस बोल, तेरहद्वार, बासठिया, बावन-बोल, गतागत, पाना की चर्चा, लघुदण्डक तथा थोकड़ों में अन्तिम थोकड़ा माना जाने वाला 'गमा' भी कंठस्थ करा दिया, उन्होंने आचार्य भिक्षु के 'दान-दया' के सिद्धांत से भी मोहन को अवगत कराया।
मोहन घंटों-घंटों तक मुनिश्री सोहनलालजी के पास अध्ययन करता, कंठस्थ ज्ञान का पुनरावर्तन करता और तात्त्विक चर्चा करता। मोहन का उनके प्रति लगाव जैसा हो गया, जब कभी वे अस्वस्थ हो जाते तो मोहन का किसी भी कार्य में मन नहीं लगता और तो क्या, भोजन करने में भी मन नहीं लगता, जब वह खाना खाने घर आता तब मां से कहता- 'मां! आज जल्दी खाना डाल दो, मुझे अभी वापस जाना है, आज हमारे 'बापजी' ठीक नहीं है।'
मुनिश्री रोशनलालजी वैरागियों के परिवार वालों से संपर्क करने तथा वैरागियों की देखभाल रखने में बड़े दक्ष थे, मोहन उनके संपर्क करने तथा वैरागियों की देखभाल रखने में बड़े दक्ष हो गए। मोहन उनके संपर्क में भी बहुत रहा, वे गोचरी के लिए पधारते तब मोहन प्रायः उनके साथ रहता, रास्ते में सेवा करता।
मुनिजन मोहन को यदा-कदा दीक्षा लेने के लिए प्रेरित करते रहते, मुनिश्री सुमेरमलजी ने भी मोहन को कई बार दीक्षा लेने के लिए कहा पर मोहन हमेशा एक अच्छा श्रावक की बात ही कहता रहा।
जल उठा दीपः वि.सं. २०३० भाद्रव शुक्ला षष्ठी। अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी का महाप्रयाण दिवस। मुनिश्री सुमेरमलजी ने कहा - 'मोहन! आज तुम्हें एक निर्णय कर लेना चाहिए कि गृहस्थ जीवन में रहना है या साधु बनना है।'
मुनिश्री के निर्देशानुसार मोहन गधैयाजी के नोहरे में एकान्त स्थान में जाकर बैठ गया। सर्वप्रथम पूज्य कालूगणी की माला फेरी, फिर चिन्तन करने लगा - 'मेरे सामने दो मार्ग हैं - एक साधुत्व का और दूसरा गृहस्थ का। साधु मार्ग में सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास, केशलुंचन, पदविहार आदि स्थिति-जनित कष्ट हो सकते हैं, दूसरी ओर गृहस्थ जीवन में भी अनेक प्रकार की चिन्ताएं आदमी को सताती रहती हैं, जैसे- व्यापार में घाटा लग जाना, सन्तान का अनुकूल न होना, पति-पत्नी में से किसी एक का छोटी अवस्था में चले जाना, अन्य अनेक पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाना आदि, जब दोनों ओर कष्ट हैं तो मुझे कौन सा मार्ग स्वीकार करना चाहिए'?
तभी दिमाग में एक बात बिजली-सी कौंध गई कि कष्ट तो दोनों तरफ हैं, जहां साधु जीवन के कष्ट मुझे मोक्ष की ओर ले जाने वाले होंगे, वहीं गृहस्थ-जीवन के कष्ट मुझे अधोगति की ओर ले जा सकते हैं, यदि मैं जागरूकतापूर्वक संयम का पालन करुंगा तो मुझे पन्द्रह भवों में मुक्ति मिल जाएगी।' बस, भीतर में जल उठे इस चिन्तन के दीप ने मोहन को साधु बनने के लिए कृतसंकल्प बना दिया, उसने वहीं बैठे-बैठे जीवन-पर्यन्त शादी करने तक का त्याग कर दिया।
आज्ञा प्राप्ति के प्रयत्नः मनुष्य के जीवन में ज्वारभाटा जैसा उतार-चढ़ाव आता रहता है जो व्यक्ति ज्वर को पकड़ लेता है, वह सौभाग्य की ड्योढी पर पहुंच जाता है और जो चूक जाता है, वह भाटे के दलदल में फंस जाता है। मोहन ने अपने भीतर उठते ज्वार को पकड़ा और सौभाग्य की ड्योढी पर पहुंच गया। मोहन ने जीवन में भावुकता में बहकर कोई निर्णय नहीं लिया, बहुत चिन्तन-मनन के बाद उसने अपने जीवन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया कि मुझे साधु बनना है।
तेरापंथ की दीक्षा मात्र स्वयं की इच्छा से ही नहीं हो सकती, परिवार की स्वीकृति भी अनिवार्य होती है। मोहन ने स्वीकृति-प्राप्ति के लिए प्रयास प्रारंभ किया। पिताश्री झूमरमलजी दूगड़ का तो स्वर्गवास हो चुका था। मोहन ने मां से कहा- 'माँ! मुझे दीक्षा लेनी है इसलिए आपकी आज्ञा चाहिए।'
माँ ने कहा- 'मोहन! मैं इस बारे में कुछ नहीं कहूंगी, सुजानमल जो कहेगा, वही होगा।'
उस समय श्री सुजानमलजी दूगड़ परिवार के मुखिया एवं संरक्षक थे, वे एक समझदार, निर्णयक्षम और प्रामाणिकतानिष्ठ व्यक्ति थे। परिवार में उनका अच्छा अनुशासन था, उस समय सुजानमलजी जोरहाट गए हुए थे, मोहन ने उनके नाम एक लम्बा-चौड़ा पत्र लिखा, जिसमें दीक्षा के लिए अनुमति मांगी गई। सुजानमलजी ने प्रत्युत्तर में लिखा - 'दिक्षा के बारे में मैं अभी कुछ नहीं कह सकता, सरदारशहर आने पर ही बात हो सकेगी।' मार्गशीर्ष महीने में वे सरदारशहर आए। घर में दीक्षा के संदर्भ में बात हुई, तब सुजानमलजी ने साफ इनकार कर दिया, जब मोहन को स्वीकृति नहीं मिली तो उसने अनुमति नहीं मिलने तक तीव्र द्रव्य से अधिक खाने का त्याग कर दिया, यह क्रम कई दिनों तक चला किन्तु आज्ञा नहीं मिली, तब एक दिन मोहन ने साहस बटोरकर कहा - 'भाईजी! यदि आप मुझे दीक्षा के लिए स्वीकृति नहीं देंगे तो मैं आपके घर में नहीं रहूंगा।' **शेष पृष्ठ १० पर...**

।। ॐ अर्हम् ।।
जय तुलसी जय भिक्षु जय महाप्रज्ञ

अहिंसा यात्रा-अणुव्रत से, युगधारा में भर रहे प्राण
दृष्टि तुम्हारी है राष्ट्र का हो सर्वांगीण निर्माण
नयी पीढ़ी को मिलता रहे संस्कारों का सिंचन
महान है श्रमणत्व तुम्हारा
।। जय-जय ज्योति चरण - जय-जय महाश्रमण ।।

Uttam Chand Nahata Jain
Manakchand Nahata Jain
Mohanlal Nahata
Sanjay Nahata Jain
Piyush Nahata Jain
Pawan Nahata

RCN Construction Company Pvt Ltd
UCN Construction Company Pvt Ltd

R. K. Path, Itachali, Nagaon, Assam, Bharat-782001
भ्रमणध्वनि. 09435061677 अणुडाक : rj.group@yahoo.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

राष्ट्रमाता बनें
निवेदकः मैं भारत हूँ फाउंडेशन

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

पृष्ठ ९ से... सुजानमलजी - 'घर से बाहर जाने पर भी तुम्हें दीक्षा तो मिलेगी नहीं।'

मोहन - 'कोई बात नहीं।'

सुजानमलजी - 'फिर तू खाना कहां खाएगा?'

मोहन - 'मैं घरों से मांग-मांगकर भोजन कर लूंगा किन्तु आपके घर में नहीं रहूंगा।'

यह कहकर मोहन घर से चला गया, उसके जाने के बाद माँ ने कहा- 'सुजान! कहीं भावावेश में आकर मोहन कोई गलत काम कर लेगा तो हमेशा के लिए हमारी आंखों से ओझल हो जाएगा, इससे तो अच्छा है कि तुम उसे दीक्षा की आज्ञा दे दो ताकि वह हमारी आंखों के सामने तो रहेगा।'

विनीत पुत्र ने मां की आज्ञा को शिरोधार्य किया, जब सायंकाल सूर्यास्त से कुछ समय पहले मोहन अपनी पुस्तकें, आसन आदि लेने के लिए घर आया तब मां ने कहा - 'मोहन! ऐसा करने से दीक्षा की आज्ञा नहीं मिलेगी। पहले खाना खा लो फिर भाईजी से अच्छी तरह बात कर लेना।' मोहन ने भी माँ की आज्ञा को शिरोधार्य किया।

खाना खाने के बाद भाईजी से बातचीत की। भाईजी ने कहा -'आषाढ़ महीने के बाद जब तुम्हारी इच्छा हो, मैं दीक्षा दिलवाने के लिए तैयार हूं।' मोहन को आज्ञा मिल गई। मां की आज्ञा तो भाईजी की अनुमति में ही निहित थी। उस दिन मोहन की प्रसन्नता का कोई पार नहीं था। वह तत्काल मुनिश्री के पास गया और सारी बात निवेदित की, उन दिनों मोहन ने पूज्य गुरूदेव तुलसी को एक पत्र लिखा, वह अविकल रूप में इस प्रकार है-

परमपूज्य परमपिता मेरे ह्रदयदेव युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी के चरणों में कोटि-कोटि वन्दना।

गुरूदेव!

पहली म्हारा भाईजी दीक्षा लेणै वास्तै मनै स्वीकृति कोनी दी, अब आपकी कृपा तथा सन्तां की प्रेरणा स्यूं मां और भाईजी कुछ महीना ठहरकर दीक्षा लेणै की स्वीकृति दे दी।

गुरूदेव! मैं आपकी कृपा स्यूं तथा मुनिश्री सोहनलालजी की कृपा तथा मेहनत स्यूं इण चौमासै में कई थोकड़ा सीख्या हूं, जिकामें-पाना कर चरचा, तेरहद्वार, लघुदण्डक, गतागत, बावनबोल, बासठियो, अल्पाबोहत, विचारबोध, जैन तत्त्व प्रदेश (प्रथम भाग), कर्म प्रकृति पहली सीखी हूँ।

गुरूदेव! आपकै श्री चरणां में म्हारी आ ही प्रार्थना है कि बीच का चार-पांच महीना ८की म्हारै अन्तराय है, आ पूरी हुंता ही गुरूदेव मनै जल्दी स्यूं जल्दी दीक्षा दिरासी।

आपका सुविनीत
शिष्य मोहन

प्रसंगोपात्त एक दिन : मुनिश्री सुमेरमलजी ने दीक्षा का मुहूर्त देखा और वैशाख महीना श्रेष्ठ बताया, किन्तु भाईजी की स्वीकृति तो आषाढ़ महीने के बाद के लिए प्राप्त थी। मुनिश्री ने उनसे कहा- आपको दीक्षा तो देनी ही है फिर आषाढ़ के बाद दें या वैशाख में दें, क्या फर्क पड़ेगा? मात्र दो-तीन महीनों के लिए अच्छे मुहूर्त को क्यों टाला जाए? तब सुजानमलजी ने कहा - 'गुरूदेव और आप जब उचित समझें, इसको दीक्षा दे सकते हैं, मेरी ओर से स्वीकृति है।'

मोहन के साथ हीरालाल बैद, बजरंग बरडिया और तेजकरण दूगड़ भी वैरागी थे। मोहनलाल और हीरालाल को तो परिवार की ओर से अनुमति मिल गई किन्तु बजरंग और तेजकरण को पारिवारिक स्वीकृति नहीं मिली, वे साधु तो नहीं बने किन्तु आज वे अच्छे श्रावक अवश्य हैं।

इस दौरान मोहन का परीक्षण भी किया गया परन्तु वह हर परीक्षा में स्वर्ण की भांति खरा उतरा। उस समय गुरूदेव तुलसी का प्रवास अणुव्रत-भवन, दिल्ली में था। मर्यादा-महोत्सव का अवसर था, मोहन अपने परिवार के साथ गुरुदर्शन के लिए दिल्ली पहुंचा।

वि.सं. २०३० माघ शुक्ला अष्टमी को प्रवचन के समय उसने एक वक्तव्य दिया, वह इस प्रकार है- **शेष पृष्ठ १२ पर...**

!! ॐ अर्हम् !!

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६५ वें जन्म वर्ष पर कोटि-कोटि वंदन

Research Dev. & Mfg. Corporation

Manufacturers Of:
SPUR, HELICAL, BEVEL, WORMS,
WORM WHEEL, RACKS & GEAR BOXES

490 (K), 2nd Stage, 4th Phase,
Peenya Industrial Area, Bangalore,
Karnataka, Bharat - 560 058
Ph. : 080 - 22974041
Fax : 080 - 41171049
Mob. : 9448045383 / 9972381111

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आइये हम सभी 'जय जिनेन्द्र' के साथ 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
Remove INDIA Name From The Constitution
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें

॥ जय गुरु नाना ॥ ॥ जय महावीर ॥ ॥ जय गुरु राम ॥

राम चमकते भानु समाना

श्री साधुमार्गी जैन संघ के नवम् पट्टधर, हुक्मगच्छाधिपति, दीक्षा प्रदाता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. अपने युवाचार्य काल से अब तक (अप्रैल 2026 तक) **488 मुमुक्षु** आत्माओ को दीक्षा प्रदान कर चुके हैं । आगे भी **22 जून 2026** को **2 मुमुक्षु** व **04 सितंबर 2026** को **2 मुमुक्षु** आत्माओ की दीक्षा होनी संभावित हैं ।

युवाचार्य काल से अब तक कुल दीक्षाएँ -**115** संत एवं **373** साध्वीवर्या, कुल **488**

वर्तमान में आचार्य श्री रामेश की नेश्राय में **97** संत एवं **451** साध्वीवर्या, कुल **548**

वंदनकर्ता

शांतिलाल सांड, बैंगलोर / देशनोक

SOUTH INDIA'S NO.1 CONSUMER DURABLE RETAILER KARNATAKA, TAMILNADU, PONDICHERRY, GOA

पृष्ठ १० से ... अपनी बात : 'परमाराध्य प्रात: स्मरणीय हृदयसम्राट युगप्रधान आचार्यश्री के श्रीचरणों में कोटी-कोटी वन्दना!
उपस्थित साधु-साध्वीवृंद! बुजुर्गों! माताओं!
आप लोग सोच रहे होंगे यह बच्चा क्यों खड़ा हुआ है? क्या कहने जा रहा है और क्या चाहता है? मेरी चाह भौतिक नहीं, आध्यात्मिक है। मेरा कथन उपदेश नहीं, निवेदन है। प्रार्थना है वह भी किसी भौतिक वस्तु के लिए नहीं, चारित्र के लिए है। साधु बनने की आकांक्षा मन में लेकर ही मैं आज यहां खड़ा हुआ हूं। आप लोग सोच रहे होंगे कि यह बच्चा है, यह साधुत्व को क्या समझेगा? जब मैं ऐसी बात किसी से सुनता हूं तो मुझे उसकी बुद्धि पर तरस आता है, हृदय करूणा से भर जाता है। सोचता हूं इन लोगों ने धर्म को समझा या नहीं, आत्मा को जाना या नहीं, अगर जाना है तो केवल मेरे शरीर से ही मेरा अंकन क्यों करते हैं? साधुत्व आत्मा की वस्तु है या शरीर की? याद रखें, धर्म आत्मा की वस्तु है, क्या मेरी आत्मा आपसे छोटी है? क्या कोई आत्मवादी ऐसा कह सकता है? शरीर से ही जो व्यक्ति छोटे-बड़े का अंकन करते हैं वे केवल हाड़-मांस और चमड़ी देखने वाले हैं।
एक कहानी मुझे याद आती है, जो मैंने सन्तों से ही सुनी है।

अष्टावक्रजी को आत्मचर्या के लिए राज्यसभा से निमंत्रण मिला, निश्चित समय पर अष्टावक्रजी राज्यसभा में पहुंचे, सभाभवन पण्डितों से भरा हुआ था, ज्योंही अष्टावक्रजी ने सभाभवन में प्रवेश किया, पण्डित लोग उनके शरीर को देखकर खिलखिलाकर हंस पड़े। आठ जगह से उनका शरीर टेढ़ा-मेढ़ा था। सारा भवन हंसी से गूंज उठा। अष्टावक्रजी ने राजा से कहा- 'राजन्! यहां पण्डित कौन है? ये सब तो चमार ही चमार हैं, किससे चर्चा करूं?'
विस्मितमना राजा ने कहा -'अष्टावक्र! ऐसे कैसे बोल रहे हो? देखो, सब सामने पण्डित ही पण्डित बैठे हैं।' अष्टावक्र- 'पण्डित कहां है राजन्! पण्डित लोग आत्म चर्चा में लीन रहते हैं और चमार लोग चमड़ी तथा हड्डियों की परिक्षा में लीन रहते हैं, ये सब मेरे शरीर को देखकर हंस रहे हैं, इसलिए पंडित कहां हैं? हंसने वाले पण्डितों पर चपत-सी लग गई।
अब आपसे ही पूछूं -'जो मेरे को छोटा बतलाते हैं, उन्हें क्या कहूं? आप सोचते होंगे, यह साधुत्व के नियम कैसे निभाएगा? अतिमुक्तक मुनि ने कैसे निभाया था? गजसुकुमाल मुनि ने कैसे कष्ट सहे? परीषह आत्मबल से ही सहा जाता है।'
अस्तु, पूज्य गुरूदेव! मेरी ओर ध्यान दें, इस बच्चे का भविष्य आपकी दृष्टि पर निर्भर है, कृपा करके प्रतिक्रमण सीखने का आदेश तो अभी फरमाएं।
प्रवचन के दौरान पूज्य गुरूदेव ने मोहन से ऐसे प्रश्न पूछे-
'बोलो वैरागीजी! आश्रव किसे कहते हैं?' प्रवचन-संपन्नता के बाद गुरूदेव अणुव्रत-भवन में ऊपर पधार रहे थे, प्रथम मंजिल की सीढ़ियों के बीच पूज्यप्रवर कुछ क्षण रूके और वहीं मोहन को प्रतिक्रमण सीखने का आदेश फरमा दिया। मोहन का रोम-रोम खिल उठा, वह अपने परिवार के साथ पुन: सरदारशहर आ गया।
दीक्षा दिल्ली में या सरदारशहर में : प्रतिक्रमण आदेश के बाद पूज्यप्रवर ने चिन्तन किया कि दीक्षा कहां हो, दिल्ली में या सरदारशहर में? उन दिनों ट्रेनों की हड़ताल चल रही थी और मोहन की अवस्था भी छोटी थी। मात्र बारह वर्ष के बालक की दीक्षा दिल्ली शहर में होना आलोचना का विषय बन सकता था। मोहन के परिवार की भी यही इच्छा थी कि दीक्षा 'सरदारशहर' में ही हो, इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए आचार्यवर ने फरमाया - 'मोहनलाल और हीरालाल की दीक्षा वि.सं. २०३१ वैशाख शुक्ला चतुर्दशी को 'सरदारशहर' में ही शिष्य मुनि सुमेर (लाडनूं) के सानिध्य में हो सकेगी।
दीक्षा-तिथि की घोषणा के बाद घर में मोहन का विशेष ध्यान रखा जाता, उसकी इच्छापूर्ति का प्रयास किया जाता। मोहन की मौसी श्रीमती झूमादेवी नखत कोलकाता में रहती थी, वह मोहन के लिए घड़ी लेकर आई। मोहन को घड़ी का बहुत शौक था, वह अपने हाथ पर घड़ी बांधकर सबको बार-बार दिखाता, उस समय तक बच्चों के हाथ पर घड़ी बंधी हुई बहुत कम देखने को मिलती थी। दीक्षा के बाद भी कई दिनों तक घड़ी देखने के लिए मोहन अपने हाथ को देखता, फिर याद आता **शेष पृष्ठ १३ पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आइये हम सभी 'जय जिनेन्द्र' के साथ 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
Remove INDIA Name From The Constitution
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें

पृष्ठ १२ से ... कि अब मैं साधु बन गया हूँ।

सौभाग्य की सौगात : वि.सं. २०३१ वैशाख शुक्ला चतुर्दशी (५ मई १९७४) का सुप्रभात मोहन के लिए सौभाग्य की सौगात लेकर आया, वह प्रातः लगभग चार बजे ही मुनिश्री के पास पहुंच गया। मुनिश्री ने फरमाया- 'मोहन! आज इतनी जल्दी आ गया?' मोहन ने कहा - 'मुनिप्रवर! आज तो मेरे लिए सोने का सूरज उगा है, मैं बहुत सौभाग्यशाली हूं कि आज मुझे आपके करकमलों से दीक्षित होने का सुअवसर मिलेगा।'

गधैयाजी का नोहरा! हजारों लोगों की उपस्थिति, लम्बे व भव्य जूलूस के साथ दोनों वैरागी श्री समवसरण में पहुंचे, अनेक लोगों ने उनके भावी जीवन के प्रति मंगल भावनाएं व्यक्त कीं। मोहन के ज्येष्ठ भ्राता अमरचन्दजी दूगड़ ने आज्ञा पत्र का वाचन किया। मोहन ने भी छोटा-सा वक्तव्य दिया। कार्यक्रम के दौरान गुरूदेव तुलसी द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन किया गया, उसका कुछ अंश इस प्रकार है-

'जैन मुनि की चर्या कठिन है, यह बात सही है। तेरापंथी जैन मुनियों की चर्या और अधिक कठिन है, इस चर्या में पांच महाव्रतों की स्वीकृति के साथ जीवनभर गुरू के चरणों में समर्पित रहना, प्रत्येक काम उनके निर्देश से करना, संघीय व्यवस्थाओं का हृदय से पालन करना आदि ऐसे विधान हैं जो व्यक्ति को चारों ओर से थाम लेते हैं, फिर भी उसमें रम जाने के बाद वे कठिनाइयां सहज बन जाती हैं, आनन्दप्रद लगने लगती हैं।

भविष्यवाणी रेखाशास्त्री की:

दीक्षा से कुछ दिन पूर्व 'सरदारशहर' के कार्यकर्ता रेखाशास्त्री अध्यापक छगनजी मिश्रा को मुनिश्री सुमेरमलजी के पास लेकर आए, उन्होंने मुनिश्री के हाथ और पैर की रेखाएं देखीं और कहा- आप दो बालकों को छह महीने के भीतर-भीतर दीक्षा देंगे, उसी समय उन्होंने मोहन के भी हाथ व पैर की रेखाएं देखीं और कहा- यह बालक आपकी (मुनिश्री की) विद्यमानता में ही धर्मसंघ में सर्वोपरि स्थान प्राप्त करेगा, दोनों ही भविष्यवाणी शत प्रतिशत सच हो गई।

विलक्षण मेधा:

जिस दिन दीक्षा स्वीकार की उसी दिन उन्होंने दसवेआलियं सूत्र कंठस्थ करना प्रारंभ कर दिया, सात सौ अनुष्टुप श्लोक प्रमाण दसवेआलियं सूत्र को मात्र चालीस दिनों में अर्थसहित कंठस्थ कर लिया। मुनि मुदितकुमारजी का प्रथम चतुर्मास सरदारशहर में हुआ, उस चातुर्मास में उन्होंने कुछ दिनों तक उपदेश प्राक वक्तव्य दिया, **शेष पृष्ठ १४ पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १३ से ... उनका प्रथम उपदेश दसवें आलियं सूत्र के प्रथम अध्ययन 'दुमपुप्फिया' पर आधारित था।

दीक्षा के कुछ दिनों बाद ही सरदारशहर के प्रबुद्ध प्रशिक्षक श्रावक श्री भंवरलालजी बैद से मुनि हेमंतकुमारजी और मुनि मुदितकुमारजी ने अंग्रेजी भाषा का अध्ययन करना प्रारंभ कर दिया। मात्र ६ महीनों में ही मुनिद्विय की प्रबुद्धता से बहुत प्रभावित हुए, उन्होंने अनेक बार मुनिश्री सुमेरमलजी से कहा- इतने ग्रहणशील विद्यार्थी मुझे पहली बार मिले हैं, श्री भंवरलालजी तेरापंथ धर्मसंघ के श्रद्धानिष्ठ और समर्पित श्रावक थे, वे अंग्रेजी और संस्कृत भाषा के अधिकृत विद्वान, कुशल अध्यापक, आयुर्वेद के ज्ञाता एवं चिकित्सक भी थे।

ज्ञान और साधना:

दीक्षा के बाद तीसरा चातुर्मास गुरूदेव तुलसी के साथ सरदारशहर में किया, उस समय वे संघ परामर्शक मुनिश्री मधुकरजी के साथ ग्रुप में रहे, फिर चौथा एवं पांचवां चातुर्मास मुनिश्री रूपचंदजी सरदारशहर के साथ जयपुर और दिल्ली में किया, इन २ चातुर्मासों में मुनिश्री रूपचंदजी की प्रेरणा व मुनिश्री मानककुमारजी के श्रम से मुनि मुदितकुमारजी ने संस्कृत भाषा का अच्छा अध्ययन किया, इससे पूर्व मुनिश्री सुमेरमलजी उन्हें संस्कृत साहित्य पढ़ाते। पण्डित रामकुमारजी संस्कृत व्याकरण कालुकौमुदी की साधनिका कराते, कुछ ही वर्षों में उन्होंने संस्कृत भाषा का गंभीर अध्ययन कर लिया, वे संस्कृत में धाराप्रवाह बोलने लगे और लिखने भी लगे। अध्ययनकाल के दौरान मुनि मुदितकुमारजी ने संस्कृत भाषा में कुछ कहानियां लिखीं, जिन्हें आज हम 'शेमुषी' नामक ग्रंथ में पढ़ सकते हैं।

एक महत्वपूर्ण साहसिक निर्णय मुनि मुदितकुमारजी पूज्यप्रवर के मार्गदर्शन में निरंतर गति-प्रगति करते रहे, उनकी प्रज्ञा की पारदर्शिता निखरती गई, वे हर क्षेत्र में आगे बढ़ते गए, साधना के पथ में आने वाली कठिनाइयों को साहस के साथ झेलते गए और सफलता के परचम फहराते गए। सचमुच, मुश्किल-भरे दिनों में जिसका साहस बरकरार रहता है, वही व्यक्ति कुछ कर गुजरने की काबिलियत रखता है। सन् १९७९ का प्रसंग है। मुनि मुदितकुमारजी, मुनिश्री रूपचंदजी के साथ अशोक विहार दिल्ली में प्रवास कर रहे थे, उस समय युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ का भी अणुव्रत भवन, दिल्ली में प्रवास हो रहा था। एक दिन अपराह्न में मुनिश्री रूपचंदजी ने मुनि मुदितकुमारजी से कहा -मैं इस संघ से अलग होने जा रहा हूँ, तुम अपना चिंतन कर लो कि तुम्हें कहां रहना है? हमारे साथ चलना है या यहीं (संघ में) रहना है।

बालमुनि मुदितकुमारजी ने तत्काल कहा- 'मैं तो संघ में ही रहूँगा' मुनिश्री रूपचंदजी ने बड़ी शालीनता के साथ कहा- 'तुम चिंता मत करना' हम तुम्हें युवाचार्यश्री के पास पहुंचा देंगे, दूसरे दिन मुनिश्री रूपचंदजी आदि संत अशोक विहार से विहार कर सी.सी. कॉलोनी आए, उधर युवाचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' सुजानगढ़ और मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी (मुंबई) को मुनि मुदितकुमारजी के पास भेजा, अगले दिन मुनिश्री रूपचंदजी आदि संत सदर बाजार में सुराणा धर्मशाला में प्रवास कर रहे थे, उस दिन दैनिक पत्र में खबर आई कि मुनि रूपचंदजी ने तेरापंथ संघ से त्यागपत्र दे दिया। मुनि रूपचंदजी और मुनि मानककुमारजी संघ से अलग हो गए। मुनि अशोककुमारजी (बैंगलोर) कुछ दिन पहले ही अलग हो चुके थे, तब मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' मुनि मुदितकुमारजी आए और पूछा- 'मूनि रूपचंदजी आदि दोनों संत संघ से अलग हो गए हैं अब तुम्हारी क्या इच्छा है? बालमुनि ने कहा- ''मैं तो संघ में ही रहूंगा''।

कृतज्ञता ज्ञापन और खमतखामणा के बाद मुनि मुदितकुमारजी ने मुनिश्री सुमेरमलजी के साथ वहां से प्रस्थान कर दिया। शेष पृष्ठ १५ पर...

।। ॐ अर्हम् ।।

जय तुलसी   जय भिक्षु   जय महाप्रज्ञ

अहिंसा यात्रा-अणुव्रत से, युगधारा में भर रहे प्राण
दृष्टि तुम्हारी है राष्ट्र का हो सर्वांगीण निर्माण
नयी पीढ़ी को मिलता रहे संस्कारों का सिंचन
महान है श्रमणत्व तुम्हारा
।। जय-जय ज्योति चरण - जय-जय महाश्रमण ।।

बिमल आसकरण जैन (दुगड़)
भ्रमणध्वनि : 98200 25699

अभिमन्यु जैन   श्रेयांस जैन

JCC
THE GIANT MOVERS

JCC INDIA PVT. LTD.
Logistics I Infrastructure I Rental

D-4100, BIMA Complex, Kalamboli, Navi Mumbai,
Maharashtra, Bharat - 410 218
Ph. : 022-27425055 Fax : 022-27425066 Email: bimaljain@jccindia.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १४ से ... मध्याह्न में वे अणुव्रत भवन पहुंच गए, जहां युवाचार्यवर विराजमान थे। मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी ने निवेदन किया- 'युवाचार्यश्री!' मुदित मुनि ने अच्छा परिचय दिया है। युवाचार्यप्रवर ने फरमाया- 'यह तो मुझे विश्वास ही था' उन दिनों गुरूदेव तुलसी पंजाब में प्रवास कर रहे थे।

वहां से भी एक संदेश आया, उसमें लिखा था- 'मुनि मुदितकुमार ने जो शासनभक्ति का परिचय दिया है, उससे मैं गदगद हूँ।' उसके अध्ययन और साधना की समुचित व्यवस्था की जाए, सचमुच जिस ग्रुप में चार सदस्य हों और चारों में परस्पर अच्छा सामंजस्य और सौहार्द हो, उस ग्रुप के मुखिया सहित तीन सदस्यों का निर्णय एक हो और सबसे छोटे 'चौथे' सदस्य का निर्णय भिन्न हो तो बहुत कठिनाई हो सकती है, किन्तु मुनि मुदितकुमारजी ने साहस, धैर्य और विजन के साथ अपने भविष्य का निर्णय लिया।

सच है, प्रवाह के विपरीत बहना संघर्ष और खतरों से खाली नहीं होता, किंतु यह भी उतना ही सत्य है कि कोई साहसिक कदम ही प्रतिस्रोतगामी बन सकता है। मुनि मुदितकुमारजी की संघनिष्ठा ने आचार्यश्री तुलसी और युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ के मन में एक नया विश्वास जगा दिया। बालमुनि के इस निर्णय ने पूज्यवरों के दिल में एक अमिट छाप छोड़ दी, उस समय उनकी अवस्था मात्र सत्रह वर्ष थी, किंतु पूज्यप्रवरों की पारखी आंखें उनमें तेरापंथ का शुभ भविष्य देखने लगी।

३० अगस्त २००१ को स्वयं आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा -'सन १९७९ में मैं दिल्ली में था, उस समय हमारे संघ के कुछ साधु पृथक हो गए, ये (महाश्रमण) पृथक होने वाले साधुओं के साथ थे पर इन्होंने अपना स्पष्ट निर्णय दिया कि मुझे तो संघ में ही रहना है, उस घटना ने मुझे पहली बार आकृष्ट किया, मैंने बाद में गुरूदेव से निवेदन किया कि इतनी छोटी अवस्था में भी इनमें जो संघनिष्ठा, आचारनिष्ठा है, वह उल्लेखनीय है, हमें इनकी ओर ध्यान देना चाहिए, उसके बाद तो मेरे और गुरूदेव के बीच इनको लेकर बातचीत होती रहती, धीरे-धीरे हर संघीय कार्य से भी जोड़ दिया गया।

सेवा का सुअवसर वि. सं. २०४१ ज्येष्ठ कृष्णा अष्टमी (१३ मई १९८४) को लाडनूं में गुरूदेव तुलसी ने मुनि मुदितकुमारजी से पूछा- तुम क्या काम कर सकते हो?' मुनि मुदितकुमारजी- जो गुरूदेव फरमाएंगे!

गुरूदेव तुलसी- आज तक हारी पंचमी समिति की पात्री मुनि मधुकरजी रखते थे, अब से तुम रखा करो।

इस निर्देश के साथ ही मुनि मुदितकुमारजी गुरूदेव तुलसी की व्यक्तिगत सेवा में नियुक्त हो गए, तेरापंथ धर्मसंघ में इस नियुक्ति **शेष पृष्ठ १६ पर...**

!! ॐ अर्हम् !!

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन

आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६५ वें जन्म वर्ष पर कोटि-कोटि वंदन

कमलेश-09425260101 बंशीलाल-09425260301 योगेश- 7587253148
गव्हेमेंट कॉन्ट्रैक्टर, सुकमा

श्रद्धानवत्

बंशीलाल-शारदा, कमलेश - सरिता, योगेश - निशा, धैर्य, सम्यक्, दर्शन, रिशिका, कृतिका एवं समस्त नाहटा जैन परिवार, सुकमा (छ.ग.)

नाहटा ब्रदर्स

बर्तन एवं हार्डवेयर के विक्रेता

राजवाड़ा रोड, पो. सुकमा, जि. दंतेवाड़ा, छत्तीसगढ़, भारत- 494111,

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए, INDIA नहीं एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १५ से ... का विशेष महत्व है, इससे अनायास ही निकटता से गुरूसेवा का अलभ्य अवसर प्राप्त हो जाता है।

लगभग बारह वर्षों तक मुनि मुदितकुमारजी को पूज्यवर की पात्र-वहन सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ, इस दायित्व का उन्होंने बड़े अहोभाव व जागरूकता के साथ निर्वाह किया, उस दिन से वे स्थायी रूप से गुरूकुलवासी बन गए।

अंतरंग सहयोगी:

वि.सं. २०४२ माघ शुक्ला सप्तमी (१६ फरवरी १९८६) मर्यादा-महोत्सव का अवसर, उदयपुर का विशाल प्रवचन पण्डाल, गुरूदेव तुलसी ने मुनि मुदितकुमारजी को युवाचार्य महाप्रज्ञ के अंतरंग सहयोगी के रूप में नियुक्त करते हुए कहा- 'संघ' में बहुआयामी प्रवृत्तियों को देखकर लगता था कि हमारे युवाचार्य महाप्रज्ञ को भी किसी सहयोगी की अपेक्षा है, इसलिए आज मैं मुनि मुदित को अंतरंग सहयोगी के रूप में नियुक्त करता हूँ, इस नियुक्ति के साथ ही वे संघ के व्यवस्था पक्ष से जुड़ गए, उनका दायित्व बढ़ गया और कार्यक्षेत्र भी विस्तृत हो गया, इससे पूर्व वे मात्र आत्मकेंद्रित थे, अपने आपमें मस्त थे, व्यस्त थे, अंतरंग सहयोगी बनने के बाद उनकी सोच का दायरा बहुत विशाल हो गया, वे सबके विकास के बारे में सोचने लगे, उनका व्यक्तित्व उभरकर सामने आने लगा।

साझपति:

वि. सं. २०४३, वैशाख शुक्ला चतुर्थी (२३ मई १९८६) की रात्रि ब्यावर का तेरापंथ भवन, गुरूदेव तुलसी ने साधु सभा के मध्य मुनि मुदितकुमारजी को साझपति (ग्रुप लीडर) बनाया, मुनि ऋषभकुमारजी को सहयोगी के रूप में तथा शैक्षमुनि धर्मेशकुमारजी को उनके संरक्षण में रखा गया।

अनौत्सुक्य का दिग्दर्शन:

सन् १९८७ का प्रसंग, पूज्य गुरूदेव तुलसी का प्रवास 'अणुव्रत भवन', दिल्ली में हो रहा था। तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी पूज्यप्रवर से मिलने आए, प्राय: सभी संत उन्हें देखने और सुनने के लिए एकत्रित हो गए किंतु मुनि मुदितकुमारजी अपने कक्ष में अनौत्सुक्य भाव से कार्य करते रहे।

महाश्रमण

वि.सं. २०४६ भाद्रपद शुक्ला नवमी (६ सितम्बर १९८९)।

योगक्षेम वर्ष का आयोजन, लाडनूं, जैन विश्वभारती में सुधर्मा सभा का प्रांगण। गुरूदेव तुलसी का चौपनवां पदारोहण दिवस। उल्लासमय वातावरण में चतुर्विध धर्मसंघ अपने आराध्य को वर्धापित कर रहा था, अचानक आचार्यवर ने अपने पट्टोत्सव को नया मोड़ देते हुए कहा-

तेरापंथ धर्मसंघ में अनेक विलक्षण कार्य हुए हैं, उनके विलक्षणताओं में, मैं एक और नया कार्य करना चाहता हूँ। आज मैं मुनि मुदित को 'महाश्रमण' के पद पर नियुक्त करता हूँ, यह पद धर्मसंघ में कार्यकारी, नए दायित्वों से परिपूर्ण और चिरंजीवी रहेगा, इस घोषणा के पश्चात आचार्यवर ने मुनि मुदितकुमारजी को नियुक्ति पत्र प्रदान किया।

भाषा इस प्रकार रही:

अध्यात्मनिष्ठा, साधना, शिक्षा, सेवा, विनम्रता, संघनिष्ठा, गंभीरता आदि विशेषताओं को ध्यान में रखकर मैं मुनि मुदितकुमार को 'महाश्रमण' के पद पर नियुक्त करता हूँ। धर्मसंघ में युवाचार्य के बाद इसका स्थान रहेगा, यह युवाचार्य के कार्य में सतत सहयोगी रहेगा। युवाचार्य की तरह साध्वियों, समणियों को पढ़ाना इसके कार्यक्षेत्र में रहेगा। आहार- पानी समुच्चय में होगा, सब प्रकार के विभागीय कार्यों तथा संघीय बोझ की पांती से मुक्त रहेगा।

युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ ने नव मनोनीत महाश्रमण को शुभाशीष देते हुए शेष पृष्ठ १८ पर...

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

सारा जमाना पदम जैन का दीवाना

हजारों परिवारों को रिश्तों में जोड़ने वाले पदमचंद जैन का हर कोई दीवाना

वैवाहिक दुनिया के बेताज बादशाह के रूप में सुप्रतिष्ठित पदमचंद जैन की आज दुनिया दीवानी है। दुनिया जिन उद्योगपतियों, फिल्मी सितारों की दीवानी है, वे सारे पदमचंद जैन के दीवाने है। और हो भी क्यों नहीं? आखिर देशभर में अब तक नामी-गिरामी परिवारों को आपस में वैवाहिक रिश्तों में जोड़ने का कीर्तिमान जो स्थापित किया है। जयपुर में एक शादी के आयोजन में जीतो के श्रेष्ठीवर्य से मुलाकात हुई। इनमें तारक मेहता का उल्टा चश्मा के फेम शैलेष लोढा, शेयर मार्केट के दिग्गज मोतीलाल ओसवाल, प्रमुख बिल्डर सुभाष रूणवाल, सेलो ग्रुप के प्रदीप राठौड, इन्स्पीरा के प्रकाश जैन, डॉ. सुरेन्द्र जैन युएसए, प्रकाश कानुगो, तेजराज गुलेच्छा, किशोर खाबिया, राकेश मेहता, शांतिलाल कवाड़, संदिप बाफना सहित अनेक दिग्गजों से मुलाकात हुई। पदमचंद जैन ने अपनी चिर परिचित शैली में सभी का आत्मीय स्वागत किया। रूणवाल परिवार में वैवाहिक आयोजन के अवसर पर परिवार को बधाई दी। पूरे भारत में ओसवाल जैन बच्चों के वैवाहिक बायोडेटा के लिए पदमचंद जैन एक जाना-माना नाम है। राजनीति, प्रशासनिक, समाजसेवी, ब्यूरोक्रेटस उद्योगपति, सहित हर क्लास परिवार के बच्चों के बायोडेटा उपलब्ध है। सच में इतनी दीवानगी देखी नहीं कहीं। हर जुबां पर पदमचंद जैन का नाम।

▪ आपके सपनों को पूरा करने वाली टीम ▪

आईजेवीओ यानी पदम परिवार की यह टीम आपके बच्चों के लिए तलाशती हैं एक-से-बढ़कर एक सुंदर रिश्तों वाला बायोडाटा

दुल्हन वही जो पिया मन भाए, बहु वही जो सास मन भाए

रिश्तों के बेताज बादशाह **पदमचंद जैन**

।। श्री पार्श्वनाथाय नमः ।।

रिश्तों का मंडप
आई जे वी ओ

विश्वस्तरीय ओसवाल-दिगम्बर जैन एवं वैश्य समुदाय के 8 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्ते करवाने का गौरवशाली कीर्तिमान स्थापित

9314510196 / 9602623456

FCP JITO
पदमचंद जैन

प्रोफेशनल, सीए, पायलट इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस, आरएएस, फिल्म, राजनैतिक क्षेत्र के अलावा हर वर्ग और क्षेत्र में कार्यरत युवा-युवतियों के लिए जांचे परखे वैवाहिक रिश्तों का खजाना

1 जून से 2000 से सतत आपकी सेवा में तत्पर

IJ VO

जैन - वैश्य वैवाहिक रिश्तों का आखिरी पड़ाव

एक छत के नीचे उपलब्ध सेवाएं

वैवाहिक-रोजगार, छात्रवृत्ति, विधवा पेंशन, मेडिकल हेल्प, प्रशासनिक एवं कानूनी सलाह, धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में सदैव अग्रणी सहयोगी

इंटरनेशनल जैन एवं वैश्य ऑर्गनाइजेशन
1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626

अपनों से हो अपनों का रिश्ता

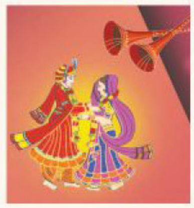

इस केन्द्र की स्थापना से लेकर अब तक लगभग 50 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्तों के बायोडेटा आ चुके हैं और निरंतर वृद्धि हो रही है। इस केन्द्र के कम्प्यूटर फीड बायोडेटा में बड़ी आसानी से मनवांछित रिश्ते के लिए बायोडेटा पलक झपकते ही उपलब्ध हो जाते हैं। देश में आज इतना बडा नेटवर्क कहीं देखने को नही मिलता जहां सभी बायोडेटा वेरीफाईड हो अर्थात प्रत्येक बायोडेटा की पूर्ण सूक्ष्मता से जांच की जाती है, उसके बाद ही बायोडेटा प्रोसेस में अग्रेषित होते हैं। इस केन्द्र में देश-विदेश के जैन-वैश्य समुदाय के हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के वैवाहिक बायोडेटा उपलब्ध हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा हो, सी.ए. हो, आई पीएस हो या राजनीति, समाजसेवा के क्षेत्र से हो, देश का ख्यातनाम औद्योगिक घराना हो या फिर मीडिया हो या फिल्मी क्षेत्र हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के बायोडेटा का नायाब खजाना है। संकोच नहीं, सम्पर्क करें : पदमचंद जैन -

सेवा के सरोकार
छात्रवृत्ति
मेडिकल शिक्षा
रोजगार
विधवा पेंशन
उक्त आवेदकों की जानकारी पूरी तरह से गोपनीय रखी जाती है।

अशोक सिरोया	चंद्रराज सिंघवी	डॉ. प्रकाश गोलेछा	नरेन्द्र कुमार जैन	बसंत जैन	संजय जैन	सुरेन्द्र कुमार जैन
अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय अध्यक्ष	योजना मंत्री	राष्ट्रीय अध्यक्ष, यू.विं	राष्ट्रीय संघटन मंत्री	कोर्डिनेटर	राष्ट्रीय प्रचार मंत्री

सेवा के पथ पर अग्रसर टीम आईजेवीओ

1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, वैभव लॉन के पास, हनुमान मंदिर के सामने, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626 / 4010196 email: neerapadamjain@gmail.com

पृष्ठ १६ से ... कहा- महाश्रमण आचार्यवर का इतना विश्वास प्राप्त कर सका, मेरे मन को भी जीत सका और हमारी सन्निधि प्राप्त कर सका, उसके लिए मैं शुभाशंसा करता हूँ कि वह इस कार्य के लिए अपनी अर्हता और ओजस्विता को और अधिक प्रकट करे तथा धर्मसंघ की अधिकाधिक सेवा करे।

महाश्रमण बनने के बाद वे युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ के हर कार्य में सहयोगी बन गए। चाहे चिन्तन गोष्ठियों हों या अन्य कोई कार्य, सबमें उनकी सहभागिता रहने लगी।

प्राय: हर कार्यों में उनकी उपस्थिति अनिवार्य सी प्रतीत होने लगी, क्या हम ही करते रहेंगे।

सामान्यत: साध्वियों-समणियों का अध्यापनकार्य आचार्य/युवाचार्य ही करते हैं, किंतु महाश्रमण की नियुक्ति के बाद यह कार्य भी उनके जिम्मे आ गया। एक दिन गुरूदेव तुलसी ने महाश्रमण मुनि मुदितकुमारजी को समणियों एवं मुमुक्षु बहनों को उच्चारण शुद्धि की दृष्टि से विशेष प्रशिक्षण देने का निर्देश दिया। उन्होंने निवेदन किया। - गुरूदेव! यह कार्य आपश्री की सन्निधि में ही चले तो ठीक रहेगा, गुरूदेव ने कहा- क्या हमेशा हम ही करते रहेंगे।

आगे तो तुम्हें ही करना है, इसलिए तुम ही उन्हें अभ्यास कराओ।

(फार्म नं.- 4 नियम 8)

अखबारों के पंजीकरण केंद्रीय नियम 1956 के नियम के तहत 'जिनागम' मुंबई के स्वामित्व और अन्य विवरण के बारे में घोषणा।

1) प्रकाशन का स्थान : गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी- 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059

2) प्रकाशन की अवधि : मासिक

3) मुद्रक का नाम : विनय ग्राफिक्स, कोंडिविटा

क्या भारतीय नागरिक हैं? : हाँ

4) सम्पादक का नाम : बिजय कुमार जैन

क्या भारतीय नागरिक है? : हाँ

पता : बी - 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059

5) इस समाचार पत्र के स्वामी व सहभागी जिनका सहभाग एक प्रतिशत से ज्यादा हो उनका नाम व पता

1) बिजय कुमार जैन
पता : बी - 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059

2) श्रीमती संतोष जैन
पता : बी - 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल,
अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059

मैं बिजय कुमार जैन, गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि. के लिए घोषणा करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के मुताबिक ऊपर लिखित विवरण सही है।

बिजय कुमार जैन
प्रकाशक के हस्ताक्षर
तारीख 9 मई 2026

एक प्रयोग, एक परीक्षण:

महाश्रमण मुनि मुदितकुमारजी प्रारंभ से ही आत्मकेन्द्रित थे, किंतु जब वे महाश्रमण बन गए और शास्ता की निगाहें उनमें शुभ भविष्य देखने लगीं, उस स्थिति में यह आवश्यक हो गया कि उनका सम्पर्क क्षेत्र व्यापक बने। जनता महाश्रमणजी की क्षमता से परिचित हो और महाश्रमणजी को भी कुछ सीखने, समझने और जानने का अवसर प्राप्त हो, इन कई बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए गुरूदेव तुलसी ने उनको स्वतंत्र यात्रा कराने पर विचार किया।

यात्रा मुनि जीवन का एक अभिन्न अंग है, एक जैन मुनि चातुर्मास के अतिरिक्त आठ महीनों तक प्राय: भ्रमणशील रहता है, यात्राएं करता है, इससे धर्म प्रभावना तथा संघ प्रभावना होती है और व्यक्तिगत अनुभव और जनसंपर्क भी बढ़ता है। महाश्रमण बनने के बाद गुरूदेव तुलसी ने उनको अपनी जन्मभूमि सरदारशहर की यात्रा करने का निर्देश दिया।

महाश्रमण पर्याय की, वह उनकी प्रथम स्वतंत्र यात्रा थी। लगभग अड़तालीस दिनों की प्रभावशाली यात्रा संपन्न कर उन्होंने 'छोटी' खाटू में गुरूदेव के दर्शन किए। युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ ने उनकी अगवानी की और स्वयं आचार्यवर ने पट्ट से नीचे उतरकर उनको अपने हृदय से लगा लिया, अपने योग्य शिष्य की सार्थक और सफल यात्रा से पूज्यप्रवर बहुत प्रसन्न थे।

कार्यक्रम के दौरान युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा 'आचार्यश्री' महाज्योति हैं, उनकी एक रश्मि, एक किरण कुछ समय के लिए गई और आज पुन: मिल गई। आचार्यवर बहुत दूरदर्शी हैं, उनके हर कार्य के पीछे एक विशेष चिन्तन होता है, इस यात्रा के पीछे भी उनका एक उद्देश्य था, उस अवसर पर गुरूदेव तुलसी ने कहा-

महाश्रमण मुनि मुदितकुमार 'थली' संभाग में अपनी सात सप्ताह की यात्रा सम्पन्न कर 'खाटु' पहुंच गया, उसे विशेष रूप से 'सरदारशहर' के लिए भेजा गया था, आज वापिस आ गया। महाश्रमण का महत्व बढ़ा है, बढ़ाया गया है, किसी को अखरा नहीं, सबने हमारी परख को सराहा है, यात्रा एक दर्पण है, इसमें व्यक्ति के व्यक्तित्व का चित्र सामने आ जाता है। 'सरदारशहर' के लोग तो इस यात्रा से महाश्रमण को स्वयं अपने आपको समझने-समझाने का मौका मिला और मुझे भी इसे निरखने-परखने का अवसर मिला।

पुन: महाश्रमण पद पर

वि.स. २०५१ माघ शुक्ला षष्ठी, ५ फरवरी १९९५ का दिन, दिल्ली में समायोजित आचार्य महाप्रज्ञ का पदाभिषेक समारोह, आचार्यश्री तुलसी ने नौ वर्ष पहले मुनि मुदितकुमारजी को युवाचार्य महाप्रज्ञ का अंतरंग सहयोगी बनाया और लगभग साढ़े पांच वर्ष पहले महाश्रमण पद पर प्रतिष्ठित किया, चूंकि अब युवाचार्य महाप्रज्ञ आचार्य बन गए, इसलिए गणाधिपति गुरूदेव तुलसी ने मुनि मुदितकुमारजी को आचार्य **शेष पृष्ठ २० पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आइये हम सभी 'जय जिनेन्द्र' के साथ 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
Remove INDIA Name From The Constitution
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें

With Best Compliments From

GIRIAS®

The Consumer Durable People

MOST TRUSTED HOUSE HOLD NAME SINCE 1971

SINCE 1971

195 MEGA SHOW ROOMS

ELECTRICAL AND ELECTRONICS CONSUMER DURABLE PEOPLE

Showrooms at

YELAHANKA
Rudreshwara Chambers
Yelahanka New Town
Sharavathi Hotel Building
Ph: 48504464

COLES PARK
No.41 (Park Grand)
St John's Chruch Road
Ph: 25362525

MATHIKERE
Opp. Ramaiah Kalyana
Mantapa, Gokula
(Near BEL Circle)
Ph: 23450101

KATHRIGUPPE
Kathriguppe Main Road
Diagonally Opp. Big Bazar
Banashankari
Ph: 9035499288

MARATHAHALLI
Outer Ring Road
(Opp. Home Town)
Ph: 90354 99011

BANNERGHATTA ROAD
NS Palya, BTM 2nd Stage
(Next To Shoppers Stop)
Ph: 2678 3030

BANASHANKARI
Ring Rd Iliyas Nagar
Near Sarakki Signal
Ph: 2671 5654

GANDHINAGAR
1st Main Road
Ph: 2220 4189

BRIGADE ROAD
138, Shoolay Circle
Ph: 2211 8871

MYSORE ROAD
Opp. Indian Oil Bunk
Ph: 2674 1227

HOSUR ROAD
Near Silk Board Flyover
Ph: 2572 4947

INDIRANAGAR
100 Ft Road
Ph: 2520 2880

HRBR LAYOUT
Opp. Kalyan Nagar
Bus Depot
Ph: 90354 99177

SADASHIVNAGAR
Opp.Cauvery Theatre
Circle
Ph: 2361 2745

JAYANAGAR
Opp. Dayanand
Sagar Mantap
Ph: 90354 99077

RAJAJINAGAR
Next to National Public
School, WOC Road
Ph: 2311 9237

BASAVANGUDI
"Chitra Court" Sankaramutt Vani
Vilas Junction, Vanivilas Road
Ph: 90354 99244

KORAMANGALA
80 Feet Road
Sony Junction
Ph: 9035411200

NAGARABHAVI
Ring Road
Near BDA Complex
Ph: 2318 6902

HOSUR
4,Prabhu Complex
Post Office Road
Ph: 04344 243633

BRANCHES: ★ HUBLI: 90354 99155 ★ MANGALORE: 90354 99211 ★ MYSORE: 90354 99099 ★ DAVANGERE: 9591987864 ★ DHARWAD: 9591987863 ★ CHENNAI: 044 26264233 ★ COIMBATORE: 0422 2230615 ★ SALEM: 0427 2330734 ★ THIRUVALLUR: 044 27663299 ★ POLLACHI: 04259 220031 ★ HOSUR: 04344 243633 ★ MADURAI: 0452 2343733 ★ TIRUPPUR: 0421 2243633

BANGALORE H.O.
GIRIAS INVESTMENT PVT LTD
#47,3rd Main Road, Near Tel. Exchange
Bangalore - 560 003
Ph: 080 41411663

CHENNAI
GIRIAS INVESTMENT PVT LTD
No 249, AH Block, 7th Main Road, 1st Street
Shanthi Colony, Chennai 600 040
Ph: 044 26223633.

SOUTH INDIA'S NO.1 CONSUMER DURABLE RETAILER

KARNATAKA, TAMILNADU, PONDICHERRY, GOA

पृष्ठ १८ से... महाप्रज्ञ के अंतरंग सहयोगी के रूप में पुन: महाश्रमण पद पर प्रतिष्ठित किया, वह नियुक्ति पत्र इस प्रकार है-

अर्हम्!

महाश्रमण मुनि मुदितकुमारजी आचार्य महाप्रज्ञ के गण संचालन के कार्य में सतत सहयोगी रहे तथा स्वयं गण-संचालन की योग्यता विकसित करे, इसके लिए अवशेष जो करणीय है, वह उचित समय पर आचार्य महाप्रज्ञ करेंगे।

संवत २०५१, माघ शुक्ला ६

- गणाधिपर्तितुलसी

मनोनयन युवाचार्य का

तेरापंथ धर्मसंघ एक आचार्य केंद्रित धर्मसंघ है, यहां किसी का चुनाव नहीं होता, आचार्य स्वयं अपने उत्तराधिकारी का मनोनयन करते हैं, इसमें किसी साधु-साध्वी या श्रावक समाज से सलाह-मशविरा नहीं किया जाता, आचार्य चाहे तो किसी से परामर्श ले सकते हैं अन्यथा अपने चिंतन के आधार पर ही इस कार्य को संपादित करते हैं, यह कार्य प्रकट नियुक्ति के द्वारा भी हो सकता है और प्रच्छन्न लिखित पत्र के आधार पर भी किया जा सकता है। तेरापंथ संघ में दोनों विधियों का प्रयोग होता रहा है, आचार्य जिसका नाम लिख देते हैं अथवा घोषित कर देते हैं, वह व्यक्ति संघ के लिए सिरमौर बन जाता है। आचार्य श्री के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण कार्य होता है- योग्य उत्तराधिकारी का मनोनयन करना, जब तक भावी व्यवस्था नहीं होती है तब तक आचार्य के सिर पर संघ का ऋण रहता है। तेरापंथ के दशम अधिशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ बहुत जल्दी ही इस ऋण से मुक्त हो गए।

हे प्रभो! यह तेरापंथ

वर्तमान को वर्धमान की जरुरत है
वर्तमान को 'जैन एकता' की जरुरत
राष्ट्रमाता बनें
परस्परोपग्रहो जीवानाम
POLYSET
DNV
POLYSET PLASTICS PVT. LTD.
901-906, 9TH FLOOR, CELLO TRIUMPH, I.B. PATEL ROAD,
GOREGAON EAST, MUMBAI,
MAHARASHTRA, BHARAT-400063
TEL: 022-66138000 FAX: 022-6638001
ppl@polyset.net
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

वि.स. २०५४ में पूज्यप्रवर का प्रवास गंगाशहर में हो रहा था, सब कुछ सामान्य चल रहा था किन्तु अचानक कुछ अकल्पित घटित हो गया। आषाढ़ कृष्णा तृतीया के दिन देखते अकस्मात गुरूदेव तुलसी की आंखें खुल गई, स्पन्दन बंद हो गया और शरीर निश्चेष्ट हो गया। गुरूदेव के महाप्रयाण के बाईस दिनों के बाद आषाढ़ शुक्ला दशमी, १५ जुलाई १९९७ को आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने यह घोषणा की-आगामी भाद्रव शुक्ला द्वादशी सावंत २०५४ दिनांक १४ सितम्बर १९९७ रविवार को मैं अपने उत्तराधिकारी/युवाचार्य के नाम की घोषणा करूंगा, इस घोषणा के बाद सबके मन में एक ही जिज्ञासा उठ रही थी कि कौन होगा तेरापंथ का भावी भाग्यविधाता ? ज्यों-ज्यों समय नजदीक आया, गंगाशहर में जन-सैलाब उमड़ने लगा।

वि.स. २०५४ भाद्रव शुक्ला द्वादशी १४, सितम्बर १९९७ का दिन। चौपड़ा हाई स्कूल में निर्मित विशाल प्रवचन पण्डाल। लाखों लोगों की उपस्थिति, जैसे ही घड़ी ने ११ बजकर २१ मिनट की सूचना दी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा-

आओ, मुनि मुदितकुमार! यह सुनते ही जयनिनादों से आकाश गूंज उठा, एक साथ उठे लाखों हाथों ने इस नाम का समर्थन किया, ऐसे अभूतपूर्व दृश्य को देखकर सब धन्यता का अनुभव कर रहे थे। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा- 'जिस समय दिल्ली में गुरूदेव ने मेरा पदाभिषेक किया, उस समय महाश्रमण मुदितकुमार को प्रदत्त पत्र में लिखा था- इसके लिए अवशेष जो करणीय है वह उचित समय पर आचार्य महाप्रज्ञ करेंगे, मुझे हर्ष है कि गुरूदेव का जो इंगित था, आज मैंने उसे क्रियान्वित कर दिया।

वि.स.२०५३ कार्तिक कृष्णा अमावस्या। दीपावली के दिन आचार्यवर ने गुरूदेव तुलसी की प्रत्यक्ष साक्षी में एक नियुक्ति पत्र लिखा था, उसका परिषद् के बीच वाचन किया गया और नव मनोनीत युवाचार्य के हाथों में थमा दिया गया १० सितम्बर १९९७ को युवाचार्य नियुक्ति के संदर्भ में एक और नियुक्ति पत्र लिखा। वह इस प्रकार है-

तेरापंथ भवन, गंगाशहर, वि.सं २०५४,

भा. शु. ८, बुधवार,१०-९-९७

अर्हम

ॐ नमो भगवते ऋषभाय

ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय

ॐ नमो भगवते महावीराय

श्री भिक्षु, भारीमल, ऋषिराय, जयाचार्य, मघवा, माणक, डालचंद, कालू तुलसी गुरूभ्यो नम:

मैं तरापंथ के दशम आचार्य के दायित्व का निर्वाह कर रहा हूँ, अब मैं अनुभव कर रहा हूँ कि मुझे आचार्य के सर्वोत्तम और सबसे अधिक महत्वपूर्ण कर्तव्य का अनुपालन करना चाहिए। तेरापंथ धर्म संघ, भिक्षुशासन की गुरू-परम्परा को अक्षुण्ण रखने के लिए अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति करनी चाहिए, मैं मेरे परम आराध्य गुरूदेव तुलसी के साक्ष्य से मुनि मुदितकुमार को अपने उत्तराधिकारी के रूप में युवाचार्य पद पर नियुक्त करता हूँ। मुझे विश्वास है कि यह अध्यात्मनिष्ठा, अनुशासन, विनम्रता और आचारनिष्ठा के साथ भिक्षु शासन की गरिमा को बढ़ाता रहेगा।

-विजयराज सुराणा जैन
दिल्ली

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

राष्ट्रमाता बनें
निवेदकः मैं भारत हूँ फाउंडेशन
मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

वैराग्य की राह पर अग्रसर संजय भैया बने मुनि सामायिक सागर

‘परतापुर’ में ऐतिहासिक पांच दीक्षा महोत्सव में ३७ वर्ष पूर्व की पुनरावृत्ति

दिगम्बर धर्म में तप को ज्यादा महत्व दिया, तप के बिना स्वर्ण भी नहीं निखरता है, तपने वाला ही मोक्षगामी बन जाता है। अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर महाराज ने जैन धर्म नगरी में दिगम्बर जैन परंपरा का एक ऐतिहासिक क्षण उस समय साकार हुआ जब वैराग्य भाव से ओतप्रोत संजय भैया ने गृहस्थ जीवन का त्याग कर संयम मार्ग को स्वीकार किया। समाज के चिंतन दोसी एवं दिलीप दोसी ने बताया कि अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर महाराज के सान्निध्य में आयोजित भव्य दीक्षा महोत्सव में बीस हजार से अधिक श्रद्धालुओं की उपस्थिति के बीच उन्हें दिगम्बर जैन साधु परंपरा में दीक्षित कर मुनि सामायिक सागर महाराज के रूप में नया आध्यात्मिक जीवन प्रदान किया गया। दीक्षा समारोह से पूर्व भैया ने जिनेन्द्र देव की शांतिधारा की और उनकी आज्ञा लेकर संजय भैया एवं अन्य दीक्षार्थी शोभायात्रा के रूप में नगर के सुभाष चन्द्र बोस स्टेडियम में पहुंचे, पांडाल में उपस्थित श्रद्धालुओं ने सफेद सरसों एवं अक्षत से उनका स्वागत कर मंच पर पहुंचाया। प्रारंभ में दीक्षार्थी संजय भैया की पत्नी सहित परिवारजनों ने चौक पुराई कर आसन बनाया, जिस पर बैठकर दीक्षार्थियों ने संयम मार्ग की ओर प्रथम कदम बढ़ाया। दीक्षा समारोह में बताया गया कि १९८९ में परतापुर की पावन भूमि पर आचार्य पुष्पदंत सागर महाराज ने पांच दीक्षाएं प्रदान की थीं, जिनमें एक दीक्षार्थी आगे चलकर आचार्य प्रसन्न सागर महाराज बने। अब २०२६ में पुनः वही इतिहास दोहराया गया, जब इसी भूमि पर फिर से पांच दीक्षा संस्कार संपन्न हुए, वह थी संस्कार की पावन भूमि परतापुर।

आचार्य श्री ने पंच मुष्ठी केशलोच करा कर दीक्षा संस्कार प्रारंभ किए तथा सभी के मस्तक पर स्वास्तिक चिन्ह बना कर वैराग्य की यात्रा प्रारंभ की, इस अवसर पर संचालन कर रहे बाल ब्रह्मचारी विज्ञानाचार्य तरुण भैया ने कहा कि कन्यादान तो हमेशा सुना है पर आज इस धरा पर गुरु के चरणों में पतिदान करके मैनादेवी ने अपनी नारी पर्याय को धन्य कर दिया। परतापुर का सौभाग्य ऐसा है कि गुरु और शिष्य दोनों की दीक्षा भूमि यही है। संजय भैया की जन्म, कर्म और दीक्षा भूमि बन गई, वहीं आचार्य प्रसन्न सागर महाराज की दीक्षा भूमि पवित्र भी यही है। आचार्यश्री ने दीक्षा महोत्सव पर कहा कि पांच पापों का त्याग कर जैनेश्वरी दीक्षा प्राप्त होती है। दिगम्बर धर्म में तप को ज्यादा महत्व दिया, तप के बिना स्वर्ण भी नहीं निखरता है, तपने वाला ही मोक्षगामी बन जाता है। ३७ वर्षों पूर्व इसी भूमि पर दीक्षार्थी के माता-पिता शीला देवी और तेजपाल पंचोरी को सौभाग्य मिला था, आज उसी गुरू से एक दिन पहले श्रीफल भेंट कर दीक्षा देने की भावना शीला देवी ने रखी और गुरु ने आशीर्वाद दिया और दीक्षा देना प्रारंभ किया। विशेष क्षण वह था, जब जिस मां ने पहले केशलोंच प्राप्त किया था, आज उसी का धर्म पुत्र मां का केशलोच कर दीक्षा दे रहा था। यह दृश्य देखकर उपस्थित श्रद्धालु भाव-विभोर हो उठे। दीक्षा से पूर्व संजय भैया ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि वे ३८ वर्षों से समाज सेवा और धर्मकार्य में लगे रहे। जीवन में आचार्य विद्यासागर जैसे महान आचार्यों सा मेरा चरित्र हो, आचार्य **शेष पृष्ठ २२ पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908
Follow for More Updates
https://www.instagram.com/mainbharathun_?
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
https://www.instagram.com /mainbharathun_?

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

शोभायात्रा में लहराई धर्म ध्वजा, अश्व पर सवार हुए बच्चे

आचार्य प्रसन्न सागर का चतुर्विध संघ सहित परतापुर नगरी में मंगल प्रवेश हुआ। इस अवसर पर पूरे नगर में श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह उमड़ पड़ा। आचार्य ससंघ प्रवेश एन.पी. मार्ट से प्रारंभ होकर आदिनाथ कॉलोनी होते हुए नगर के प्रमुख मार्गों से गुजरा। मार्ग में आकर्षक स्वागत द्वार पर जगह-जगह पुष्प वर्षा कर, आचार्य संघ का स्वागत किया गया। श्रद्धालुओं ने गुरु चरणों में वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। मंगल प्रवेश शोभायात्रा का प्रमुख आकर्षण धर्म ध्वजा रही, जिसके साथ अश्व दल एवं बालिका मंडल स्कूटी पर सवार होकर जयकारे लगाते हुए आगे बढ़ रहे थे। नासिक ढोल की गूंज पर श्रद्धालु झूमते हुए नृत्य करते नजर आए। मंगल कलश के साथ महिला मंडल, नेमिनाथ नवयुवक मंडल बोहरी समाज एवं सभी समाज के लोग नजर आये समाजजन अपनी वेशभूषा में चल रहे थे तथा पारंपरिक वेशभूषा में कलाकार नृत्य कर रहे थे। शोभायात्रा नगर भ्रमण करती हुई गणेश मंदिर पहुंची, जहां जैन समाज परतापुर ने आचार्य का पाद प्रक्षालन किया गया। शोभायात्रा श्री १००८ नेमिनाथ मंदिर पहुंची, जहां धर्म सभा का आयोजन हुआ। सभा में संघस्थ मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक एवं क्षुल्लिका ने वैराग्य धारण कर संयम मार्ग अपनाने की प्रेरणादायक जीवन गाथाएं सुनाई। आचार्य प्रसन्न सागर महाराज ने प्रवचनों में धर्म, संयम और आत्मकल्याण का संदेश देते हुए आध्यात्मिक जीवन की ओर अग्रसर होने का आह्वान किया। आचार्य श्री के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य कोठारी मोहित परिवार एवं दोसी विपिन परिवार को प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन दिशि जैन ने किया। अतिथियों के भोजन की व्यवस्था पुण्यार्जक पंचोरी अशोक हुकमचंद परिवार द्वारा की गई। यह जानकारी प्रचार प्रसार संयोजक नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल औरंगाबाद ने 'जिनागम' पत्रिका को भेजी है।

वीर परिवार श्री सुनील जी स्नेह लता जी मेहता उदयपुर एवं अन्य परिजनों का श्री साधुमार्गी जैन संघ जोरावर पुरा नोखा द्वारा आत्मीय स्वागत बहुमान किया गया मुमुक्षु कृति जी मेहता उदयपुर का २३ अप्रैल २०२६ को अत्यंत सादगीपूर्ण जैन भागवती दीक्षा संपन्न हुई।

पृष्ठ २१ से... कनकनंदी जैसी त्याग समता हो, आचार्य सुन्दर महाराज जैसा मेरा वात्सल्य हो, आचार्य श्री सन्मति एवं आचार्य प्रसन्न सागर जैसी मेरी साधना, तप हो आज्ञा सागर जैसी मेरी सरलता हो और आर्यिका मां विज्ञानमति माताजी जैसी चर्या हो मेरी। क्षमा को आदर्श मानकर साधना करने की भावना व्यक्त की। इस अवसर पर आचार्य श्री ने ज्ञानप्रभा माताजी को गणिनी पद से सुशोभित किया, जो संघ की सभी आर्यिकाओं का संचालन करेंगी। दीक्षा संस्कार के दौरान आचार्य श्री प्रसन्न सागर महाराज ने आचार्य कुंदकुंद आम्नाय परंपरा के अनुसार नामकरण संस्कार कर संजय भैया को मुनि सामायिक सागर महाराज के नाम से संबोधित किया तो हजारों श्रद्धालुओं ने दोनों हाथ जोड़कर पहला नमोस्तु करते हुए इनके उत्कृष्ट साधना की कामना की। दीक्षार्थियों के लिए पिच्छिका तथा कमंडल और शास्त्र परिवारजनों ने आचार्य श्री को भेंट किए, इसके बाद आचार्य श्री ने मुनि सामायिक सागर महाराज सहित पांचों दीक्षार्थी को पिच्छिका व कमंडल व शास्त्र प्रदान कर संयम जीवन का प्रारंभ कराया। दीक्षा महोत्सव में भोजन प्रभावना के दातार मैयावत परिवार का सम्मान किया। संजय भैया-मुनि सामायिक सागर महाराज, क्षुल्लक अर्घ सागर मुनि अर्घ सागर महाराज, क्षुल्लिका धर्म प्रभा माताजी, आर्यिका धर्म प्रभा माताजी, कनक दीदी-क्षुल्लिका द्रव्य प्रभा माताजी, सुशीला पंचोरी-क्षुल्लिका भाव प्रभा माताजी, कार्यक्रम में देश विदेश एवं कई राज्यों से आए श्रद्धालु मौजूद रहे। ऐसी जानकारी प्रचार प्रसार संयोजक नरेंद्र अजमेरा व पियुष कासलीवाल औरंगाबाद ने 'जिनागम' पत्रिका को दी है।

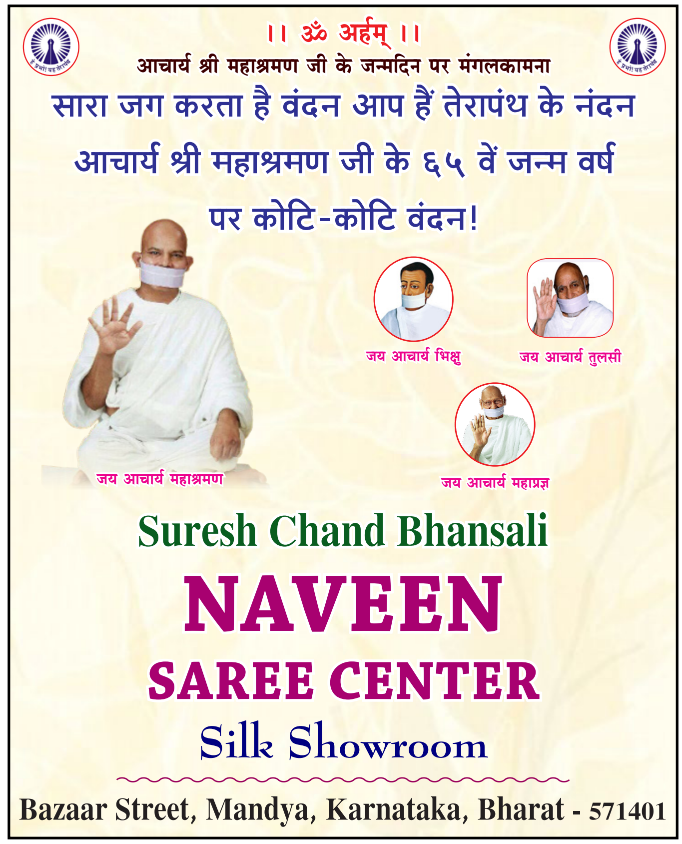

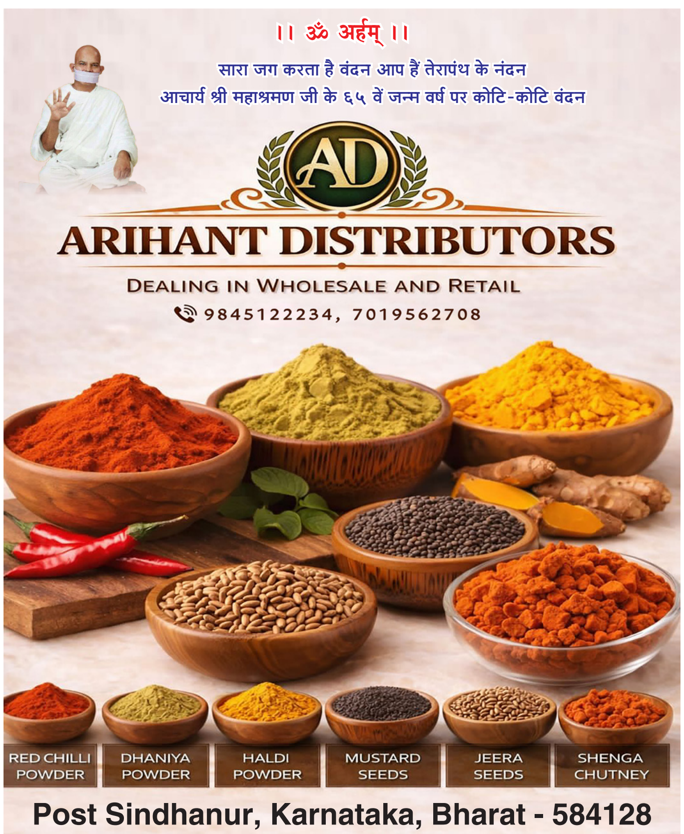

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जवानी का सच और जीवन की पुकार

अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज

औरंगाबाद नरेंद्र पियुष जैन बांसवाड़ा राजस्थान अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय पियूष सागरजी महाराज ससंघ परतापुर बांसवाड़ा में विराजमान हैं उनके सानिध्य में वहां विभिन्न धार्मिक कार्योकम संपन्न हो रहें हैं उसी श्रृंखला में उपस्थित गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए आचार्य श्री ने कहा कि मैं आज के आम आदमी की रोज़मर्रा की ज़िंदगी को देख रहा हूँ, आज हालात ऐसे हो गए हैं कि बचपन से सीधा बुढ़ापा आ जाता है। जवानी कब आती है और कब चली जाती है, इसका पता ही नहीं चलता।

छोटे-छोटे बच्चों की आँखों पर भारी नंबर का चश्मा दिखता है, युवाओं के सिर पर समय से पहले सफ़ेद बाल नज़र आते हैं, नौजवान भी थके-हारे, बूढ़े इंसान की तरह दिखाई देते हैं, आज के युवा के चेहरे पर न ओज है, न तेज, धँसी हुई आँखें, पिचके गाल, मुरझाया चेहरा और निराशा में भटकता मन, यही आज की जवानी का विचित्र चित्र बन गया है, वह बुरी आदतों और व्यसनों का इतना आदी हो चुका है कि उसकी जवानी जैसे लकवाग्रस्त हो गई है। सच कहें तो आज की जवानी मानो ठहर सी गई है।

मेरी कोशिश है कि देश के नौनिहालों और युवाओं को जीवन जीने की कला सिखाई जाए, उन्हें उनके कर्तव्यों का बोध कराया जाए, दिन इस तरह जियो कि रात को चैन की नींद आए और रात इस तरह बिताओ कि सुबह किसी से आँख मिलाने में शर्म न हो, जवानी इस तरह जियो कि बुढ़ापे में पछताना न पड़े और बुढ़ापा इस तरह बिताओ कि किसी के सामने हाथ न फैलाना पड़े।

जीवन को महान बनाने के लिए इन चार बातों से ऊपर उठना होगा:-

(१) मुझसे नहीं होगा।
(२) अभी मेरा मूड नहीं है।
(३) मेरी किस्मत खराब है।
(४) लोग क्या कहेंगे-?

क्यों अधमरा जीवन जी रहे हो-? जो करना है और जो पाना है, उसके लिए पूरी ताकत लगा दो, फिर देखना, तुम्हें आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता।

जीवन में हिम्मत से हारना, पर हिम्मत कभी मत हारना!!!

-नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल औरंगाबाद

VALUE COUNTER MODEL - KM 9014A
UPDATES WITH NEW NOTES
NEW PRODUCT

FEATURES :
- Automatic start, stop and clear.
- With Batch, Add and Self-checking functions.
- UV, MG, IR and MT counterfeit detection.
- Automatic half-note, chained note detecting.
- Double-note detecting with IR.
- LCD turns red when detects fake note.

SPECIFICATIONS :
- Counting Display : 4 digits
- Batch Display : 3 digits
- Counting speed : 1000pcs/min
- Hopper Capacity : 300 notes
- Stacker Capacity : 200 notes
- Size of countable note : 50*110-90*190mm
- Power Supply : AC220V±10% 50Hz
- Power Consumption : ≤ 80W
- Size of box : 375*333*251 mm

KUSAM-MECO®
An ISO 9001:2015 Company
Shop No. 18, 1st floor, CIDCO Shopping Complex, Plot No 9, Sector-7, Rajiv Gandhi Marg, Sanpada,Navimumbai-400705. INDIA. Tel.: 022-27754546, 27750662 / 0292
Email :sales@kusam-meco.co.in Web : www.kusamelectrical.com

मोहन खेडा तीर्थ जीसो के संस्थापक सुरेश पुनमिया ने की मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से सदिच्छा भेंट

शताब्दी गौरवः मोहन खेड़ा। मध्य प्रदेश के पावन मोहन खेड़ा तीर्थ में जी-सो के संस्थापक सुरेश पुनमिया ने मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम कैबिनेट मंत्री चेतन्य कश्यप से परम पूज्य आचार्य श्री लेखेंद्र सूरीश्वरजी महाराज साहेब एवं पूज्य हितेशचद्र सूरीश्वरजी महाराज साहेब की पावन निश्रा में सदिच्छा भेंट की एवं उन्हें जीसो द्वारा किये जा रहे जैन एकता के कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को सम्मान स्वरूप जीसो स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। यह गरिमामयी अवसर आध्यात्मिक ऊर्जा, सामाजिक एकता और सकारात्मक संवाद से परिपूर्ण रहा।

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

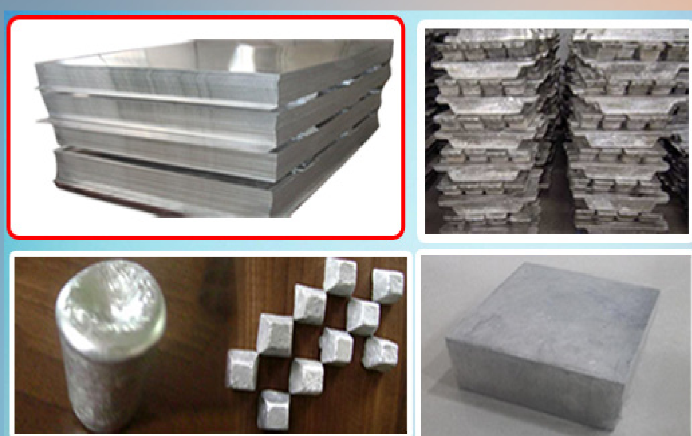

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

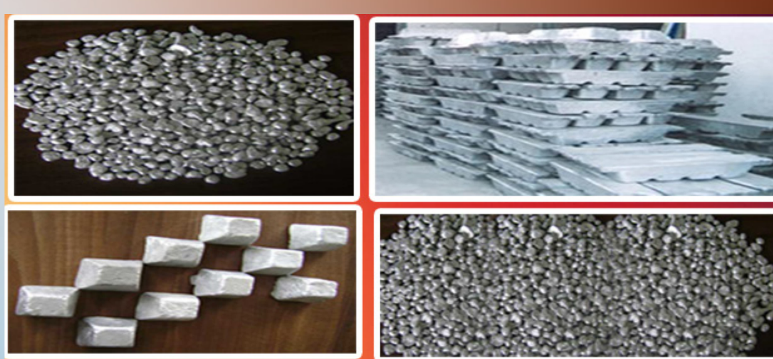

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road,
Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

युवा समाजसेवी, गौ सेवक कार्य सम्राट बैंगलुरू निवासी महेंद्र मुणोत के कार्यों की झलकियां

बापूजी नगर के लोगों ने डॉ. भीमराव अंबेडकर की १३५वीं जयंती खुशी और उत्साह के साथ मनाई। खास मेहमान महेंद्र मुनोत ने बाबासाहेब डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर की तस्वीर पर माला चढ़ाई और अन्नदानम प्रोग्राम में सेवा की। BJP कार्यकर्ता नारायण और पापन्ना ने मुनोत को सम्मानित किया।

बाबासाहेब डॉक्टर भीमराव रामजी आंबेडकर के जन्मदिवस के उपलक्ष में भीम आर्मी द्वारा श्रीरामपुर में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत ने अंबेडकर की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करके अपने वक्तव्य में कहा 'हमें जाति, भाषा, संप्रदाय, प्रांत से ऊपर उठकर राष्ट्रहित में काम करना है' आयोजकों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

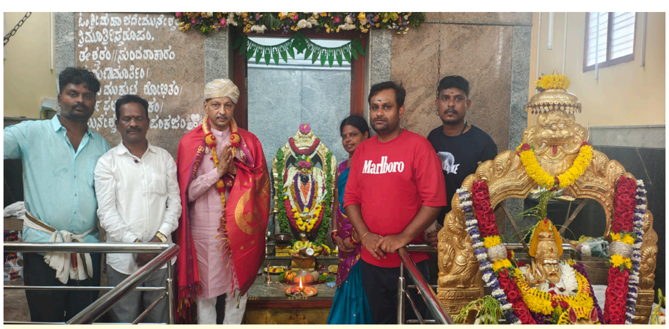

श्री जडे मुनेश्वरा स्वामी देवस्थान ट्रस्ट द्वारा मुनेश्वरा ब्लॉक स्थित श्री मुनेश्वरा स्वामी देवस्थान में ५४ वीं जात्रा महोत्सव का आयोजन किया गया। विशेष अतिथि महेंद्र मुणोत ने भगवान मुनेश्वर स्वामी के दर्शन कर आशीर्वाद लिया एवं अन्नदान कार्यक्रम में सेवा प्रदान की, मंदिर के प्रमुख पुजारी गोविंदराज एवं भाग्यामा ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

जैन साधार्मिक सेवा संघ बेंगलुरु द्वारा गुरु दर्शन एवं भव्य तीर्थ यात्रा के उपलक्ष में बेंगलुरु टाउन हॉल में आनंदमय महोत्सव २०२६ का आयोजन किया गया, जिसमें प्रसिद्ध कलाकार हितेश मेहता ने मनभावन भक्ति गीतों की प्रस्तुति दी, जिससे श्रोता मंत्र मुग्ध हो गए। कार्यक्रम में तीर्थ यात्रियों को किट वितरित किए गए एवं तीर्थ यात्रियों को असुविधा ना हो इसलिए उन्हें दिशा निर्देश का पालन करने का आग्रह किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सप्तगिरि गौड़ा, महेंद्र मुणोत, इंद्र नाहर, अशोक गुगलिया, किरण बोहरा, अरुण भंसाली, गौतम चंद धारीवाल, मनोज बाफना, उत्तमचंद कोठारी, कैलाश सकलेचा एवं संजय बेद उपस्थित थे। आयोजकों ने अतिथियों को सम्मानित किया।

लायन विष्णु अभिमानी संघ नागप्पा ब्लॉक द्वारा बेंगलुरु नगर देवता श्री अण्णम्मा देवी उत्सव हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया गया, मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत ने देवी मां के दर्शन कर आशीर्वाद लिया एवं जरूरतमंद बच्चों में शिक्षण सामग्री वितरित की, आयोजकों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

कर्नाटक मानव हक संरक्षण संस्था द्वारा बेंगलुरु रविंद्र कला क्षेत्र में पुरस्कार वितरण

विभिन्न क्षेत्रों में सेवा देने वाले साधकों को पुरस्कृत किया गया, कर्नाटक महिला आयोग की अध्यक्ष नागलक्ष्मी चौधरी ने दीप प्रज्वलन से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ, मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत ने अपने वक्तव्य में कहा पुरस्कार या सम्मान किसी प्रतिभा का सही मापदंड नहीं होता, लेकिन पुरस्कार या सम्मान व्यक्ति को और अच्छा करने के लिए प्रेरित करता है, संस्था के अध्यक्ष गणेश ने अतिथियों को सम्मानित किया।

हाय, हैलो छोड़िये, जय जिनेन्द्र बोलिए!

Ideal place for
Marriages, Conferences & Relaxation

Khanvel RESORT SILVASSA

09320023557
09824056861
022-26352635
022-26305555

follow us on:
/thekhanvelresort
/khanvelresort
www.khanvelresort.com

sales@khanvelresort.com

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६५ वें जन्म पर्व पर शत् शत् नमन

विजयराज सुराणा जैन
9868807683

राजीव सुराणा जैन
9810030672

शुभम सुराणा जैन
9891794576

SWASTIK
Marketing Company

Manufacturers & Dealers
XLPE/PVC Armoured & Unarmoured Telecommunication
& Co-axial, House Wiring & Submersible, Instrumentation

Ollvin
Connecting life...
WIRES & CABLES

B-35/3, Jhilmil Industrial Area, Delhi- 110095
E-mail: swastikmarketing.70@gmail.com
www.ollvin.in

'जैन एकता' से ही होगा जैन समाज का विकास व बढ़ेगा सम्मान मिल कर कहें हम-सब जैन हैं

Samrat Jewellers SJ

नवग्रह रत्नों के व्यापारी
मणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा,
नीलम गोमेदक, लहसुनिया, नवग्रह रत्न अपनी राशी के
अनुसार रत्न धारण करने से हर समस्या दूर होकर,
स्वास्थ लाभ, समुद्र शाली, व हर क्षेत्र
में सफलता प्राप्त होती है
हमारे यहां सभी राशियों के रत्न हमेशा उपलब्ध रहते हैं
एक बार अवश्य संपर्क करें

अनोखीलाल नाहर जैन पंकज नाहर जैन

३१ - ए कीर्तीकर मार्केट, दादर पश्चिम, मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत - ४०००२८ फोन ०२२-२४३०६६४२
मो: ९८९२८०५०६९

!! ॐ अर्हम् !!

जय भिक्षु

जय तुलसी

जय महाप्रज्ञ

जय महाश्रमण

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६५ वें जन्म पर्व पर शत् शत् नमन

प्रकाशचन्द्र एस. चपलोत
प्रमिला पी. चपलोत

स्व. श्रीमती सुंदरबाई स्व. श्री सोहनलालजी चपलोत
निवासी: झौर, राजसमंद
पुत्र - पुत्रवधू : राखी पूरण चपलोत
पुत्री - जमाई : वंदना अंकितजी धाकड़ एवं
समस्त चपलोत परिवार

वंदना ज्वेलर्सः
कुलाबा, कफ परेड, मुंबई - 400005
मो: 9969158565/ 9768259921

'जैन एकता' से ही होगा जैन समाज का विकास व बढ़ेगा सम्मान मिल कर कहें हम-सब जैन हैं

भंवरलाल पगारिया जैन
वरीष्ठ उपाध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
भूतपूर्व अध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
कार्यकारिणी सदस्य
अ.भा.श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, दिल्ली
मुख्य मार्गदर्शक
श्री मरुधर केसरी जैन गुरु सेवा समिति, बैंगलोर
37, हॉस्पीटल रोड, बैंगलोर, कर्नाटक, भारत- 560053
फोन :- 080 22383557 मो. - 09448238429

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय भारत! जय जिनेन्द्र!

भारत को 'भारत' ही बोलेंगे INDIA नहीं

महेंद्र डोसी
अध्यक्ष तेरापंथ सभा चिकमंगलूर
राणावास निवासी-कर्नाटक प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९४४८९००६८३

महेंद्र जी आचार्य श्री महाश्रमण तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें आचार्य हैं, उनके भीतर समस्त साधु-संतों एवं तेरापंथ समाज को साथ लेकर चलने की अद्भुत क्षमता है, वे अत्यंत ज्ञानवान हैं तथा आगमों का गहरा ज्ञान रखते हैं, उनका शांत एवं सरल स्वभाव तथा सदैव मुस्कुराता हुआ चेहरा हर किसी को सहज ही प्रभावित कर देता है। तेरापंथ समाज को आगे बढ़ाने तथा धार्मिक क्रियाओं में समयानुकूल सुधार लाने के लिए वे निरंतर चिंतनशील रहते हैं। समाज को किस प्रकार संगठित और प्रगतिशील बनाया जाए, इस दिशा में वे समय-समय पर सकारात्मक परिवर्तन करते रहते हैं। धर्मसंघ की धार्मिक व्यवस्थाओं एवं क्रियाओं में आवश्यक सुधार करना भी उनके विशेष गुणों में सम्मिलित है, जो भी उनके दर्शन करने आता है, वे सभी को स्नेहपूर्वक आशीर्वाद प्रदान करते हैं, उनके मार्गदर्शन में आज समस्त संघ नई ऊँचाइयों को छू रहा है, उनकी कृपा सम्पूर्ण समाज पर सदैव बनी रहे, यही मंगलकामना है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका विचार अत्यंत प्रेरणादायक है कि समाज में 'एकता' होना बहुत आवश्यक है। आज हमारा समाज विभिन्न पंथों में विभाजित अवश्य है तथा सभी की अपनी-अपनी मान्यताएँ और धार्मिक परंपराएँ हैं, जो अपने स्थान पर उचित हैं, किन्तु सामाजिक स्तर पर, विशेष रूप से महावीर जन्मोत्सव जैसे अवसरों पर समस्त जैन समाज में एकता बनी रहनी चाहिए।

यदि कहीं भी जैन समाज को आवश्यकता पड़े, तो सभी जैन एकजुट होकर उसका सामना करें। सरकार अथवा किसी भी प्रकार की विपरीत परिस्थितियों के सामने हमारी एकता ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति बनेगी। जैन समाज पहले से ही संख्या में कम है, यदि हम आपस में बंट जाएंगे, तो भविष्य में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है, इसलिए समाज की मजबूती और सुरक्षा के लिए एकता अत्यंत आवश्यक है।

गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान अवश्य मिलना चाहिए, गाय में कई देवी-देवताओं का वास होता है, गाय की पूजा की जाती है, सनातन धर्म में भी गाय को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, इसलिए गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान अवश्य मिलना चाहिए।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, पर आज विश्व स्तर पर हमारे देश की पहचान इंडिया है, जो उचित नहीं हैं।

महेंद्र जी मूलतः राजस्थान स्थित राणावास जिले में स्थित 'गुड़ा रामसिंह' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'चिकमंगलूर' में ही संपन्न हुई है, यहां आप आभूषणों के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय रहते हैं। वर्तमान में तेरापंथ सभा चिकमंगलूर के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं, यथासंभव अन्य सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-जिनागम

सुनील काला
राष्ट्रीय संयोजक अ. भा. पुलक चेतना मंच
सेलू निवासी-छ. संभाजी नगर प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८२२०३४३३१

सुनील जी आचार्य श्री पुलक सागर जी के जन्म दिवस पर शुभकामनाएं देते हुए अपने भाव व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री पुलकसागरजी महाराज के प्रति मेरी भावनाएँ शब्दों में पूरी तरह व्यक्त करना कठिन है, आचार्य श्री पुलकसागरजी महाराज 'जैन संत' का जीवन त्याग, तप और संयम का ऐसा प्रकाश है, जो मेरे जैसे साधारण व्यक्ति को भी सही मार्ग दिखाता है, उनके प्रवचन सुनकर मन में शांति, श्रद्धा और आत्मविश्वास का अनुभव होता है, उनकी पावन प्रेरणा से 'जीन शरणं' का भाव मेरे जीवन में एक नया बदलाव लेकर आया है, जब भी मैं 'जीन शरणं' का स्मरण करता हूँ, मन के भीतर एक अलग ही शांति और स्थिरता का अनुभव होता है, ऐसा लगता है जैसे जीवन की सभी उलझनों का समाधान इसी शरणं में मिल जाता है।

शेष पृष्ठ २९ पर...

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आइये हम सभी 'जय जिनेन्द्र' के साथ 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
Remove INDIA Name From The Constitution
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें

पृष्ठ २८ से... मेरे लिए आचार्य श्री केवल एक संत नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक और प्रेरणास्रोत हैं, उनका सादा जीवन, उच्च विचार और करुणामय स्वभाव मुझे हमेशा बेहतर इंसान बनने के लिए प्रेरित करता है, मैं हृदय से प्रार्थना करता हूँ कि उनका आशीर्वाद सदैव हम सभी पर बना रहे और हम उनके बताए हुए धर्म के मार्ग पर चलते रहें।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि सकल जैन समाज को 'एक' होना बहुत जरूरी है, क्योंकि आज परिस्थितिया इतनी विकट बन चुकी है कि गोत्र को लेकर जो विवाह की समस्याएं निर्माण होती जा रही है, वह सर्वथा अनुचित है, रोटी बेटी का व्यवहार समस्त जैन समाज में एक दूसरे से होना चाहिए और अन्य प्रयासों के माध्यम से हम समाज में एकता ला सकते हैं ऐसा मेरा मानना है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से विमुख हो रही है, आज परिवार द्वारा युवाओं की शिक्षा पर विशेष जोर दिया जा रहा है जो इन एकल परिवार भी इसका सबसे बड़ा कारण है, पहले परिवार संयुक्त हुआ करते थे, बच्चों को अपने बड़े बुजुर्गो से धर्म और समाज से जुड़ने की प्रेरणा मिलती थी, पर अभी यह सब नहीं दिखाई देता, इसलिए युवा पीढ़ी धर्म और समाज से विमुख होने लगी है।

गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान अवश्य मिलना चाहिए, गाय से प्राप्त होने वाली प्रत्येक वस्तु मानव जीवन के लिए बहुत ही उपयोगी होती है, हमारे लिए गाय तो माता के समान ही है पर उन्हें राष्ट्र सम्मान अवश्य मिलना चाहिए।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से भारत ही हमारे देश का मूल नाम है। 'जिनागम' पत्रिका के माध्यम से किया जा रहा प्रयास बहुत ही सराहनीय है।

सुनील जी के पूर्वज मूलतः राजस्थान के निवासी थे, आपका परिवार कई पीढ़ियों से महाराष्ट्र के 'परभणी' जिले में स्थित 'सेलू' में बसा हुआ है, आपका जन्म व शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले कई सालों से आप छत्रपति संभाजीनगर में बसे हैं और इनकम टैक्स अधिवक्ता के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। 'अखिल भारतीय पुलक चेतना मंच' के संयोजक के रूप में कार्यरत हैं, पूर्व में उपाध्यक्ष रहे हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-जिनागम

कमल जैन (बैंगानी)

कार्यकारिणी सदस्य जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
बीदासर निवासी-दिल्ली प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९३१२२१००९४

कमलजी आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्यश्री तेरापंथ समाज को अनुग्रहित करते हैं, उन्होंने समाज में नैतिकता, नशामुक्ति व अहिंसा की भावना से जन जागृति फैलाई है, उनके विचारों व मूल्यों को जीवन में आत्मसात कर जीवन को नई दिशा प्रदान कर सकते हैं, उनके जन्मदिवस व ५०वें दिक्षा दिवस के अवसर पर कोटि कोटि वंदन, उनका मार्गदर्शन हमें हमेशा प्राप्त होता रहे यही कामना करता हूं।

'जैन एकता' के विषय पर अपने मत व्यक्त करते हुए कमलजी कहते हैं कि समाज में 'जैन एकता' आवश्यक है, चाहे दिगम्बर हों या हों श्वेताम्बर, सभी तीर्थंकर महावीर के ही अनुयायी हैं, उनके द्वारा दिए सिद्धांतों का हम पालन करते हैं, तो समाज में यह पंथवाद व संप्रदायवाद क्यों? दिल्ली स्थित विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से हम 'जैन एकता' के लिए विशेष प्रयास करते रहते हैं, हमारा यह भी कहना है कि इस बार जनसंख्या गणना में अपने नाम के साथ 'जैन' शब्द अवश्य लगाएं, तभी हमें हमारा वास्तविक महत्व मिलेगा, हमारी वास्तविक जनसंख्या मिलेगी, जिसके माध्यम से हम राजनीति व सामाजिक महत्व प्राप्त कर सकेंगे, इसके लिए समाज में जागरूकता भी आवश्यक है।

साथ ही समाज सुधार भी आवश्यक है, जिसके लिए शादी से पहले प्री वेडिंग शूट नही होनी चाहिए, शादी के दिन ही होनी चाहिए, खाने की वैरायटी में कमी हो, मेहंदी के लिए महिला को ही बुलाना चाहिए, शादी के दौरान सड़कों पर नाचना नहीं चाहिए।

आज का युवा वर्ग अपने भौतिकवादी समाज के पीछे भाग रहा है, जिससे जैन समाज के युवा वर्ग की स्थिति बहुत ही खराब हो रही है, इसे सुधारने के लिए हम भी प्रयासरत हैं, साथ ही समाज के सभी लोगों से अनुरोध है कि युवा वर्ग हमारा भविष्य है अतः अपने धर्म और समाज को बचाए रखने के लिए युवाओं को अपने धर्म से जोड़ना होगा। आचार्यश्री महाश्रमणजी 'अहिंसा यात्रा' के द्वारा भारत भर में भ्रमण कर नैतिकता, सद्भावना व नशा मुक्ति का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं जो तीर्थंकर महावीर के सिद्धांतों से प्रेरित है, अतः हमारा भी यह प्रयास है कि इस अभियान को और तेजी से बढ़ाया जाए।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं' विषय पर आपका कहना है कि हमारे देश का वास्तविक नाम तो 'भारत' ही है और केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, इसी से हमारे देश की पहचान जीवित रहेगी और भारतीय संस्कृति को बढ़ावा मिल सकेगा।

कमलजी मूलतः राजस्थान के 'बीदासर' के निवासी हैं। पिछले कई वर्षो से दिल्ली के अरिहंत नगर में बसे हुए हैं और यहां लेबल के कारोबार से जुड़े हैं। भारतीय जैन संघटना पश्चिम क्षेत्र दिल्ली के अध्यक्ष, अणुव्रत समिति दिल्ली के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा दिल्ली के परामर्शक, जैन श्वेताम्बरतेरापंथ सभा पश्चिम विहार दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष रहे हैं। वर्तमान में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के कार्यकारिणी सदस्य है, भवाल माता जनसेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष है, कई अन्य संस्थाओं में विशेष पदों पर सेवारत हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-जिनागम

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

कंवरलाल नाहर

अध्यक्ष तेरापंथ सभा सिंधनुर
पाली निवासी-सिंधनुर प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८४५१२२२३४

कंवरलाल जी आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति अपने भाव को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री की वाणी बहुत ही सरल और सुगम होती है, उनके प्रवचनों से हर व्यक्ति प्रभावित होता है और अपने जीवन में आत्मसात करके अपने जीवन को उत्थान की ओर ले जाता है, उनका व्यक्तित्व और आभामंडल बहुत ही अनुपम है जिसने संपूर्ण तेरापंथ धर्मसंघ को एकसूत्र में बांधा है और अनुशासित रखा है, जिसके कारण आज तेरापंथ धर्मसंघ एक नई ऊंचाइयों को छू रहा है, उन्होंने अपनी अहिंसा पदयात्रा के माध्यम से जन जागृति फैलाई है, उनके सानिध्य में ऐसा प्रतीत होता है कि हमेशा उनके सम्मुख बैठे रहें, उनके दर्शन लाभ लेते रहें, ऐसे गुरुवर का सानिध्य हमें प्राप्त हुआ, उनके चरणों में कोटि-कोटि वंदन....

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से समाज में एकता होना बहुत जरूरी है और इसके लिए आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा आचार्य श्री डॉ. शिवमुनि और आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. को साथ लेकर समाज 'संवत्सरी' द्वारा मनाने का प्रयास किया जा रहा है, जो 'जैन एकता' की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा, हमारे अन्य त्यौहार भी एक साथ मनाया जाए, तो हम 'जैन एकता' की दिशा में अवश्य बढ़ सकते है। धर्म और समाज के वर्चस्व को बनाने के लिए समाज में 'एकता' होना बहुत जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज के प्रति अधिक सजग है उनमें भी धर्म को लेकर जागृति निर्माण हो रही है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, इस अभियान का मैं समर्थन करता हूं।

कंवरलाल जी मूलतः राजस्थान के 'पाली' जिले में स्थित 'खेरवा' के निवासी हैं, आपका परिवार लगभग १३४ सालों से कर्नाटक के 'सिंधनुर' में बसा हुआ है, आपका जन्म व शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, यहां आप कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। तेरापंथ सभा सिंधनुर के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं, अन्य कई सामाजिक संगठनों में भी सक्रिय रहते हैं। जय भारत! जय गौमाता! **-जिनागम**

भगवानलाल सिंघवी

पूर्व अध्यक्ष तेरापंथ सभा पालघर
उदयपुर निवासी-पालघर प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८२३१८२३७६

भगवानलाल जी आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री के बारे में जितना कहा जाए उतना कम है, आप एक महान तपस्वी संत हैं, जिन्होंने पूरे तेरापंथ धर्मसंघ को एक सूत्र में बांधकर रखा है, जो उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि या कला कही जा सकती है, साथ ही धर्म संघ के प्रत्येक छोटे-बड़े साधु-साध्वियों, श्रावकों का बारीकी से ध्यान रखते हैं, सब को साथ लेकर चलने वाले व्यक्तित्व हैं, हर किसी के प्रति उनकी अपनी आत्मीयता जुड़ी हुई है, उनका सरल और प्रभावशाली व्यक्तित्व हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है, उनके जन्मदिवस पर उन्हें कोटि-कोटि वंदन! उनकी कृपा दृष्टि संपूर्ण धर्म संघ पर बनी रहे यही कामना करते हैं।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है, 'एकता' होना बहुत जरूरी है, आज जैन समाज को अल्पसंख्यक का दर्जा मिला है, जिससे हमारे अस्तित्व पर खतरा आ गया, अपने धर्म समाज के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए समाज में एकता होना जरूरी है और सभी को अपने नाम के साथ गोत्र के बजाय 'जैन' अवश्य लिखना चाहिए, तभी हमारी वास्तविक संख्या का पता चलेगा और हमारा अस्तित्व बढ़ेगा।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म समाज से अधिक जुड़ी है, उन्हें जोड़ना बहुत जरूरी है, आज यह देखने में आ रहा है कि युवा में बहुत जागृति आई है।

गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान निश्चित रूप से मिलना ही चाहिए।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए और लोगों में इसके प्रति जागृति निर्माण होनी जरूरी है।

भगवानलाल जी मूलतः राजस्थान के उदयपुर जिले में स्थित 'नादेशमा' के निवासी हैं। आपका जन्म व शिक्षा महाराष्ट्र के 'पालघर' में संपन्न हुई है, यहां आप अनाज होलसेल के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, तेरापंथ सभा पालघर के अध्यक्ष रहे हैं, वर्तमान में नादेशमा तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष की भूमिका निभा रहे हैं, पालघर होलसेल मर्चेंट एसोसिएशन के अध्यक्ष पद पर भी सक्रिय हैं। जय भारत! जय गौमाता! **-जिनागम**

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आइये हम सभी 'जय जिनेन्द्र' के साथ 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
Remove INDIA Name From The Constitution
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें

सुरेश चंद भंसाली
अध्यक्ष तेरापंथ सभा मण्डिया
पाली निवासी-कर्नाटक प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९४८०४६३८२५

सुरेश जी आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री का पूरा जीवन हमें प्रभावित करता है, उन्होंने जैन धर्म को आगे बढ़ाने के लिए अपना सब कुछ समर्पित कर दिया, आज तेरापंथ धर्म संघ उनके मार्गदर्शन में निरंतर अग्रसर है और एक नई-नई ऊंचाइयों को प्राप्त कर रहा है, उनका शांत सरल व्यक्तित्व हर किसी को प्रभावित करता है, उनकी प्रवचन शैली बहुत ही सरल और सुगम में होती है, उनके पास आने वाले प्रत्येक श्रावक-श्राविकाएं अपनी जिज्ञासा को अवश्य शांत कर पाते हैं और उचित मार्गदर्शन मिलता हैं, उनका सानिध्य हमेशा सकारात्मक ऊर्जा देता है, उनकी कृपा दृष्टि हमेशा प्राप्त होती रहे यही मंगल कामना करते हैं।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित 'एकता' समाज में बहुत जरूरी है, पर आज यह सिर्फ बातें हो रही हैं, आचार्य श्री तुलसी के समय से यह प्रयास किया जा रहा है, वर्तमान आचार्य महाश्रमण जी द्वारा श्रमण संघ को एकजुट करने के प्रयास हेतु आने वाले २५ वर्षों तक 'संवत्सरी' एक साथ मिलकर मनाने का प्रयास किया जा रहा है, ऐसे प्रयासों से ही 'जैन एकता' की ओर बढ़ सकते हैं और होना भी चाहिए।

आज की युवा पीढ़ी पहले की अपेक्षा अपने धर्म समाज के प्रति सजग हैं, तेरापंथ युवक परिषद विभिन्न आयामों को लेकर आगे बढ़ रहा है।

भारत हमारे देश का प्राचीन और ऐतिहासिक नाम है, पर यह राजनीतिक मुद्दा है और राजनीतिज्ञों द्वारा ही सुलझाया जा सकता है।

सुरेशचंद जी मूलतः राजस्थान पाली जिले में स्थित 'जोजावर' के निवासी हैं, आपका जन्म राजस्थान व शिक्षा कर्नाटक के 'मण्डिया' में संपन्न हुई है, यहां आप व्यापार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-जिनागम

गोशाला झण्डे लगे, गो-माता हर्षाय।
करें गाय की वंदना, गाय बढ़ाती आय।।
गौ माता बनें राष्ट्रमाता अभियान के समर्थन का निवेदन।

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य श्री महाश्रमण जी के
६५वें जन्म वर्ष पर कोटि-कोटि वंदन

स्व. सुमेरमल सुराणा
३८ वें पुण्यस्मरण पर अभिवादन तथा
भावभीनी श्रद्धांजलि!

युग प्रधान गणाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य श्री तुलसी एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञजी एवं
आचार्य श्री महाश्रमणजी के परम अनुयायी तथा आपके त्याग, तप, गुरुभक्ति एवं पुरुषार्थ के अनोखे
धर्म भावों को देखकर आचार्य श्री तुलसी के द्वारा

लाडनुं (राजस्थान) में 'प्रामाणिक प्रवर' के उच्च सम्मान से अलंकृत सन्मार्ग दीपक
रीखबचंद, चांदमल, ललित, राजेश, विनय

धन होकर भी सादा जीवन,
जिसकी सुंदर एक प्रतिमा थी,
अनुशासन और संत समागम
'समीर' तुम्हारी एक प्रतिमा थी

''सदा धर्म के पथ पर चलकर
जिया अनोखा जीवन आपने
राग-द्वेष को निष्कासित कर
किया अनूठा जीवन आपने

आचार्य श्री भिक्षु और
महावीर के शासन को
अपनाया आपने जीवन की
हर घड़ियों में अनुशासन को

एवं समस्त सुराणा परिवार, संभाजीनगर (औरंगाबाद), महाराष्ट्र,
भारत-४३१००१, (राजस्थान में राणावस, जिला- पाली, मारवाड़)

जय आचार्य भिक्षु
जय आचार्य तुलसी
जय आचार्य महाप्रज्ञ

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६५ वें जन्म वर्ष पर कोटि-कोटि वंदन

Ashok Hirawat
Mob. 9849331484

Kiran Plastic
Dealers in: Plastic Goods & Novelty Items
15-1-469, Near Mahaveer Bhavan Feelkhana,
Hyderabad, Telangana, Bharat-500012
Ph.: 040-24742854/ 24605400
e-mail:-kiranplastichyd@gmail.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

राष्ट्रमाता बनें
निवेदकः मैं भारत हूँ फाउंडेशन

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

'मैं भारत हूं फाउंडेशन' द्वारा आयोजित १५ नवंबर २०२६ को भारत के हर क्षेत्र में गोपाष्टमी की पूर्व संध्या पर होगा आर्तनाद 'गौमाता बने राष्ट्रमाता'

मुंबई: 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' द्वारा मुंबई के मिरा रोड में स्थित 'केशव

सृष्टि' गौशाला में 'गौमाता बनें राष्ट्रमाता' अभियान के तहत १० मई को 'त्रिमातृ दिवस' के उपलक्ष पर गौमाता की सेवार्थ कार्यक्रम में, 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' के संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन, अग्रबंधु सेवा समिति के ट्रस्टी कान बिहारी अग्रवाल, पार्श्वगायक संगीतकार रवि जैन, गौ भक्त ओंकार चौधरी, मनीष राजपुरोहित, सुभाष चौधरी, कपिल कियावत, मनीष शाह, संजय गग्गड़, सुभाष छाजेड़, ताराचंद शर्मा, मुकेश शर्मा, ममता अग्रवाल, निकिता अग्रवाल, किरण मेहता विमला देवी दाधीच, अनुपमा शर्मा दाधीच, संध्या मौर्या, घाटकोपर से कमलेश जी व अन्य गौभक्त उपस्थित थे। गायक रवि जी ने 'गौमाता बनें राष्ट्रमाता' पर गीत प्रस्तुत किया, भारत गौ सेवक समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष गौभक्त कमलेश पारीक 'कमल' जी ने 'गौ अमृतम' का वाचन प्रस्तुत किया।

उपस्थित सभी गौभक्तों ने कहा कि १५ नवंबर २०२६ को विराट स्वरूप हजारों की संख्या में उपस्थित होकर 'गोपाष्टमी' के पावन पर्व की पूर्व संध्या पर 'केशव सृष्टि' में उपस्थित होकर गौमाता की सेवार्थ उपस्थित होंगे और 'गौमाता बनें राष्ट्रमाता' की सफलता पर चर्चा करेंगे।

बता दें कि इसी प्रकार कुरावली (मैनपुरी) में भारतीय संस्कृति के संरक्षण और गौमाता को राष्ट्रमाता का दर्जा दिलाने के संकल्प के साथ १० मई २०२६ को एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' द्वारा आयोजित किया गया, इस कार्यक्रम मुख्य उद्देश्य समाज में भारतीय

संस्कृति के प्रति जागरूकता बढ़ाना और गायों के संरक्षण हेतु ठोस कदम उठाना है। कार्यक्रम के विशेष आकर्षण के रूप में 'त्रिमातृ शक्ति' के दर्शन किए गए, जिसमें भारत माता, गौमाता और जननी (माँ) के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की गई, इस वृहद आयोजन को सफल बनाने के लिए कई संस्थाएं एक साथ आई हैं, जिनमें मुख्य रूप से शामिल हुए श्री महावीर जीव दया समिति, कुरावली भारतवर्ष श्री दिगम्बर जैन युवा महासभा, कुरावली श्री दिगम्बर जैन युवा महासभा कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए अध्यक्ष संदीप जैन रिंकू, महामंत्री अनुराग जैन 'जौली' और कोषाध्यक्ष अखिल जैन 'सोनू' सहित पूरी टीम सक्रिय है, साथ ही मुंबई के 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के अध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार बिजय कुमार जैन और महाराष्ट्र गौरव डॉ. अल्पना गंगवाल जैन का भी विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। कोलकाता, पुणे, इंदौर, मालेगांव, शिरूर, जालनि आदि के समाचारों को जिनागम पत्रिका के अगले अंक में जरूर पढ़ें।

-मैं भारत हूं

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आइये हम सभी 'जय जिनेन्द्र' के साथ 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, बासोकुंड वैशाली को बिहार सरकार द्वारा बंद करने के संबंध में

जैन धर्म के २४वें तीर्थंकर भगवान महावीर की जन्मस्थली क्षेत्र वैशाली के 'बासोकुंड' में स्थित संस्थान की स्थापना १९५० के दशक में बिहार सरकार के सहयोग तथा जैन समाज के प्रयासों से हुई थी, इस संस्थान के भवन निर्माण के लिए स्वर्गीय श्री साहू शांति प्रसाद जैन द्वारा ६.२५ लाख की उदार राशि तात्कालीन समय में दानस्वरूप प्रदान की थी, उस समय यह राशि अत्यंत महत्वपूर्ण थी और इसी के माध्यम से इस संस्थान की स्थापना संभव हुई, इस संस्थान का शिलान्यास २३ अप्रैल १९५६ को भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा किया गया था।

स्वतंत्र भारत में प्राकृत एवं जैन दर्शन का ये सबसे पहला संस्थान था, जहाँ से न केवल 'भारत' बल्कि विदेश के जैन-अजैन विद्वानों ने शिक्षा प्राप्त की। बिहार सरकार इस संस्थान की शैक्षणिक गतिविधियों को बंद करने तथा इसके भवन एवं परिसर को शिक्षा विभाग से हटाकर निदेशालय संग्रहालय, कला एवं संस्कृति विभाग को हस्तांतरित करने का प्रस्ताव किया है।

सरकार द्वारा पांडुलिपियों के डिजिटलीकरण का उल्लेख किया गया है, किंतु वास्तविकता यह है कि संस्थान के पुस्तकालय में कोई पांडुलिपियाँ उपलब्ध नहीं हैं, यहां केवल प्रिंटेड पुस्तकें हैं, जिस अवधि में इस संस्थान की स्थापना हुई थी, उसी समय बिहार में तीन भाषाई शोध संस्थान स्थापित किए गए थे—

➩ संस्कृत शोध संस्थान, दरभंगा
➩ पाली शोध संस्थान, नालंदा
➩ प्राकृत शोध संस्थान, बासोकुंड, वैशाली

इनमें से संस्कृत एवं पाली संस्थान आज भी बिहार सरकार के सहयोग से संचालित हो रहे हैं, जबकि प्राकृत शोध संस्थान, जो कि प्राकृत भाषा एवं जैन दर्शन के अध्ययन के लिए स्थापित पहला सरकारी संस्थान था, उसे बंद किया जा रहा है।

यहां तीन तथ्य ध्यातव्य हैं-

१. तीर्थंकर महावीर की जन्मभूमि पर स्थित संस्थान है, जहाँ अब दर्जनों बौद्ध मंदिर बन गए हैं, जन्म स्थल से ३०० मीटर की दूरी पर चर्च बन गया है, स्थानीय राजपूत भगवान महावीर के क्षत्रिय होने के कारण श्रद्धा रखते हैं, एवं इस स्थान पर ईसाई गतिविधि के विरोध में हैं, फिर भी बौद्धों के बाद ईसाइयों द्वारा धर्म परिवर्तन के प्रयास शुरू हो चुके हैं।

२. जैन समाज किसी विश्वविद्यालय में जैन चेयर की स्थापना होने पर गौरवान्वित अनुभव करता है, वहीं एक शोध संस्थान जो दशकों तक जैन दर्शन एवं प्राकृत का अन्तर्राष्ट्रीय शोध केन्द्र रहा, खत्म कर दिया गया है।

३. अन्य दो संस्थानों को हर तरह से विकसित किया गया, वहीं प्राकृत संस्थान में दो दशकों से नियुक्ति रोक कर अब पूर्ण रूप से खत्म कर दिया जा रहा है, जिनायतनों पर ही नहीं अब जिनवाणी प्रसार पर आघात होने लगा है।

इस विषय पर संज्ञान लेते हुए 'झारखंड राज्य दिगम्बर जैन धार्मिक न्यास बोर्ड' के अध्यक्ष ताराचंद जी द्वारा बिहार के राज्यपाल, बिहार के मुख्यमंत्री, भारत के शिक्षा मंत्री व पर्यटन सांस्कृतिक मंत्री को पुनर्विचार के संबंध में पत्र प्रेषित किया गया।

-प्रदीप बड़कुल

पता - १, अणे मार्ग, पटना, बिहार, भारत
email- cmbihar@nic.in

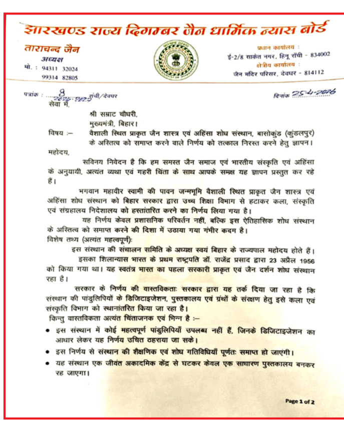

झारखण्ड राज्य दिगम्बर जैन धार्मिक न्यास बोर्ड

ताराचन्द जैन
अध्यक्ष
मो. : 94311 32024
99314 82805

प्रधान कार्यालय :
ई-2/8 साकेत नगर, हिनू राँची - 834002
क्षेत्रीय कार्यालय :
जैन मंदिर परिसर, देवघर - 814112

पत्रांक : 8 2026-2027 रांची/देवघर
दिनांक 25-4-2026

सेवा में,
श्री सम्राट चौधरी,
मुख्यमंत्री, बिहार।

विषय :- वैशाली स्थित प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, बासोकुंड (कुंडलपुर) के अस्तित्व को समाप्त करने वाले निर्णय को तत्काल निरस्त करने हेतु ज्ञापन।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि हम समस्त जैन समाज एवं भारतीय संस्कृति एवं अहिंसा के अनुयायी, अत्यंत व्यथा एवं गहरी चिंता के साथ आपके समक्ष यह ज्ञापन प्रस्तुत कर रहे हैं।

भगवान महावीर स्वामी की पावन जन्मभूमि वैशाली स्थित प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान को बिहार सरकार द्वारा उच्च शिक्षा विभाग से हटाकर कला, संस्कृति एवं संग्रहालय निदेशालय को हस्तांतरित करने का निर्णय लिया गया है।

यह निर्णय केवल प्रशासनिक परिवर्तन नहीं, बल्कि इस ऐतिहासिक शोध संस्थान के अस्तित्व को समाप्त करने की दिशा में उठाया गया गंभीर कदम है।

विशेष तथ्य (अत्यंत महत्वपूर्ण):

इस संस्थान की संचालन समिति के अध्यक्ष स्वयं बिहार के राज्यपाल महोदय होते हैं।

इसका शिलान्यास भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा 23 अप्रैल 1956 को किया गया था। यह स्वतंत्र भारत का पहला सरकारी प्राकृत एवं जैन दर्शन शोध संस्थान रहा है।

सरकार के निर्णय की वास्तविकता: सरकार द्वारा यह तर्क दिया जा रहा है कि संस्थान की पांडुलिपियों के डिजिटाइजेशन, पुस्तकालय एवं ग्रंथों के संरक्षण हेतु इसे कला एवं संस्कृति विभाग को स्थानांतरित किया जा रहा है।

किन्तु वास्तविकता अत्यंत चिंताजनक एवं भिन्न है :-

- इस संस्थान में कोई महत्वपूर्ण पांडुलिपियाँ उपलब्ध नहीं हैं, जिनके डिजिटाइजेशन का आधार लेकर यह निर्णय उचित ठहराया जा सके।
- इस निर्णय से संस्थान की शैक्षणिक एवं शोध गतिविधियाँ पूर्णतः समाप्त हो जाएंगी।
- यह संस्थान एक जीवंत अकादमिक केंद्र से घटकर केवल एक साधारण पुस्तकालय बनकर रह जाएगा।

Page 1 of 2

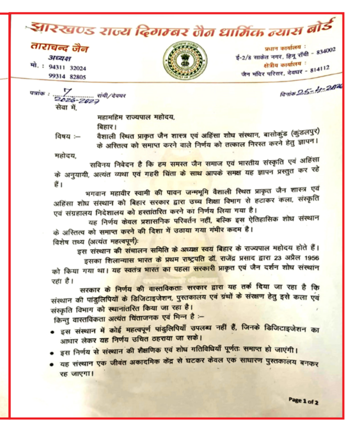

झारखण्ड राज्य दिगम्बर जैन धार्मिक न्यास बोर्ड

ताराचन्द जैन
अध्यक्ष
मो. : 94311 32024
99314 82805

प्रधान कार्यालय :
ई-2/8 साकेत नगर, हिनू राँची - 834002
क्षेत्रीय कार्यालय :
जैन मंदिर परिसर, देवघर - 814112

पत्रांक : 7 2026-2027 रांची/देवघर
दिनांक 25-4-2026

सेवा में,
महामहिम राज्यपाल महोदय,
बिहार।

विषय :- वैशाली स्थित प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, बासोकुंड (कुंडलपुर) के अस्तित्व को समाप्त करने वाले निर्णय को तत्काल निरस्त करने हेतु ज्ञापन।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि हम समस्त जैन समाज एवं भारतीय संस्कृति एवं अहिंसा के अनुयायी, अत्यंत व्यथा एवं गहरी चिंता के साथ आपके समक्ष यह ज्ञापन प्रस्तुत कर रहे हैं।

भगवान महावीर स्वामी की पावन जन्मभूमि वैशाली स्थित प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान को बिहार सरकार द्वारा उच्च शिक्षा विभाग से हटाकर कला, संस्कृति एवं संग्रहालय निदेशालय को हस्तांतरित करने का निर्णय लिया गया है।

यह निर्णय केवल प्रशासनिक परिवर्तन नहीं, बल्कि इस ऐतिहासिक शोध संस्थान के अस्तित्व को समाप्त करने की दिशा में उठाया गया गंभीर कदम है।

विशेष तथ्य (अत्यंत महत्वपूर्ण):

इस संस्थान की संचालन समिति के अध्यक्ष स्वयं बिहार के राज्यपाल महोदय होते हैं।

इसका शिलान्यास भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा 23 अप्रैल 1956 को किया गया था। यह स्वतंत्र भारत का पहला सरकारी प्राकृत एवं जैन दर्शन शोध संस्थान रहा है।

सरकार के निर्णय की वास्तविकता: सरकार द्वारा यह तर्क दिया जा रहा है कि संस्थान की पांडुलिपियों के डिजिटाइजेशन, पुस्तकालय एवं ग्रंथों के संरक्षण हेतु इसे कला एवं संस्कृति विभाग को स्थानांतरित किया जा रहा है।

किन्तु वास्तविकता अत्यंत चिंताजनक एवं भिन्न है :-

- इस संस्थान में कोई महत्वपूर्ण पांडुलिपियाँ उपलब्ध नहीं हैं, जिनके डिजिटाइजेशन का आधार लेकर यह निर्णय उचित ठहराया जा सके।
- इस निर्णय से संस्थान की शैक्षणिक एवं शोध गतिविधियाँ पूर्णतः समाप्त हो जाएंगी।
- यह संस्थान एक जीवंत अकादमिक केंद्र से घटकर केवल एक साधारण पुस्तकालय बनकर रह जाएगा।

Page 1 of 2

वर्तमान को वर्धमान की जरुरत है
वर्तमान को 'जैन एकता' की जरुरत

पं.पू १०८ आचार्य
श्री समय सागरजी महाराज

संत शिरोमणि १०८ आचार्य
श्री विद्यासागरजी महाराज

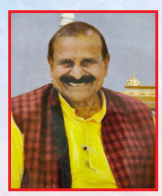

ताराचन्द जैन
Mob: 9431132024/ 9931482805
अध्यक्ष
झारखण्ड राज्य दिगम्बर जैन धार्मिक न्यास बोर्ड, झारखण्ड सरकार
मुख्य कार्यालयः E २/८, साकेत नगर, हिनू, राँची, झारखण्ड, भारत
क्षेत्रीय कार्यालय : जैन मन्दिर परिसर, देवघर, झारखण्ड, भारत
email: tcjaindeoghar@yahoo.com
भारत को 'भारत' ही बोला जाए   एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

Intensive

Investment Banking ♦ Family Office ♦ NBFC
www.intensivefiscal.com

~ Unique Advice. Capital Market Insight, Efficient Execution, Delivering Financial Growth

Recent IPO

~~~ Our Services ~~~

- Public Issue (IPO)
- M&A / Strategic Acquisition
- Wealth Management & Advisory
- Right Issue / Buy-Back
- Takeover / Open Offer
- Valuation & ESOP
- Private Equity
- QIP Placement
- Pre-IPO Placement
- Debt Syndication
- Amalgamation & Demerger
- Financial Engineering

Intensive Fiscal Services Private Limited

RO: - 914, Raheja Chambers, Free Press Journal Marg, Nariman Point, Mumbai –400021, India,
Tel: +91-22-22870443 / 44 / 45, **Contact Person:** Virendra Bajaj +91 9699292100
Email: admin@intensivefiscal.com , virendra@intensivefiscal.com
Web: www.intensivefiscal.com

सम्पादक-बिजय कुमार जैन

जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

हम सब जैन हैं

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर
पूरे साल
पत्रिका मुफ्त

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा
इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

वार्षिक शुल्क
२१००/-

मात्र रु. १५०/- में, प्रति महिना

पंजीकृत कार्यालय

गेलॉर्ड पब्लिकेशन्स प्रा.लि.

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-४०१५ ८०९४ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना : www.jinagam.co.in

अहिंसा

परस्परोपग्रहो जीवानाम

Postal Registration Number - MCN/192/2024-2026
WPP License No. MR/Tech/WPP-319/North/2024-26
Published on 09th May 2026 & Posting On 10th & 12th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणु डाक -mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना : www.jinagam.co.in, द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI NO. MAHHIN/2006/19598